महाकवि कालिदास सूर्यदेव महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका

पल्लव-प्रकाश

प्रकृति से प्रेरणा, जीवन में प्रकाश

महाकवि कालिदास
सूर्यदेव महाविद्यालय, चंदौना, दरभंगा
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की स्नातकोत्तर इकाई

मुख्य संपादक :

डॉ. सिद्धार्थ शंकर सिंह

संपादक मंडल :

डॉ. ममता पांडेय
डॉ. ज्योतीन्द्र कुमार
डॉ. मनीष यादव

BOARD OF EDITORS

CHIEF EDITOR

Dr. Sidharth Shankar Singh
Principal, M.K.S. College, Trimuhan-Chandauna

EDITORS

Dr. Mamta Pandey
Dr. Jyotindra Kumar
Dr. Manish Yadav

ADVISORY BOARD

Sri Lal Babu Sahni

Dr. Vinay Kumar

Sri Mukesh Kumar

Dr. Khushbu Kumari

Dr. Babita Kumari

Dr. Omprakash Prabhakar

Dr. Aftab Alam

Dr. Irshad Husain

Mrs. Sheetal Kumari

Dr. Jay Prakash Jha

Dr. Sudhanshu Shekhar Jha

Dr. Mithilesh Kumar

(Disclaimer)

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, शोध–आलेख, कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण तथा अन्य रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्य एवं मत संबंधित लेखक/रचनाकार के निजी एवं स्वतंत्र विचार हैं। इनसे प्रधान संपादक, संपादक मंडल अथवा महाकवि कालिदास सूर्यदेव महाविद्यालय, चंदौना का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री की वैचारिक, तथ्यात्मक, भाषिक तथा कॉपीराइट संबंधी समस्त जिम्मेदारी संबंधित लेखक/रचनाकार की होगी। संपादक मंडल केवल रचनाओं के संपादन एवं प्रकाशन का दायित्व निभाता है तथा प्रकाशित सामग्री के विचारों एवं तथ्यों के लिए उत्तरदायी नहीं होगा।

पल्लव प्रकाश

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY
(A Multidisciplinary Education and Research University (MERU) under PM-USHA.)
कामेश्वरनगर, दरभंगा - 846004 बिहार
Kameshwaranagar, Darbhanga 846004 Bihar

प्रोफेसर संजय कुमार चौधरी
कुलपति
Prof. Sanjay Kumar Choudhary
Vice-Chancellor

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि महाविद्यालय परिवार अपनी वार्षिक पत्रिका "पल्लव–प्रकाश" का प्रकाशन पूरे हर्ष उल्लास से करने जा रहा है।

वार्षिक पत्रिका महाविद्यालय के लिए केवल भौतिक उपलब्धियों का लेखा–जोखा ही नहीं है, वरन् यह महाविद्यालय की गौरवमयी परम्परा की वास्तविक प्रस्तुति है। यह पत्रिका छात्र–छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मुझे पूरा विश्वास है कि प्रबन्ध समिति तथा सम्पादक मण्डल के सहयोग से पत्रिका का प्रकाशन अपने उद्देश्यों को पूरा करने में खरा उतरेगा। मै "पल्लव प्रकाश" के प्रकाशन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

Sanjay Kumar Choudhary

पल्लव प्रकाश

धन्यवाद ज्ञापन

एम.के.एस. महाविद्यालय परिवार की ओर से मुख्य संरक्षक **प्रो. संजय कुमार चौधरी**, माननीय कुलपति, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा को समाजशास्त्र, हिंदी एवं इतिहास विषय में स्नातकोत्तर महाविद्यालय का दर्जा प्रदान करने एवं इस शुभ अवसर पर अपनी गरिमामयी उपस्थिति, प्रोत्साहन एवं शुभकामनाएँ प्रदान के लिये हार्दिक कृतज्ञता एवं आभार प्रकट करते हैं।

महाविद्यालय परिवार आपके द्वार महाविद्यालय के हित में लिए गए एक विशिष्ट निर्णय के लिये भी आपका कोटि–कोटि आभार प्रकट करता है। आपने दिनांक 28.07.2025 को इस महाविद्यालय में एक सच्चे विद्वान, प्रखर व्यक्तित्व एवं कुशल प्रशासक के रूप में सम्माननीय **डॉ. सिद्धार्थ शंकर सिंह** जी को एम.के.एस. महाविद्यालय का प्राचार्य नियुक्त किया। आदरणीय प्राचार्य महोदय द्वारा मात्र एक वर्ष की अवधि में इस महाविद्यालय के लिए किए गए अद्भुत शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यों ने संस्थान की गरिमा, कार्यसंस्कृति और शैक्षणिक वातावरण को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। प्राचार्य महोदय के दूरदर्शी नेतृत्व, निष्ठा, अनुशासन, और अकादमिक उत्कृष्टता के प्रति समर्पण से महाविद्यालय को निरंतर प्रेरणा एवं प्रगति का मार्ग प्राप्त हुआ है।

माननीय कुलपति **प्रो. संजय कुमार चौधरी** जी की प्रेरणादायी भूमिका, शैक्षणिक उन्नयन के प्रति आपकी प्रतिबद्धता तथा महाविद्यालय के विकास हेतु आपके मार्गदर्शन से समस्त महाविद्यालय परिवार उत्साहित एवं अभिभूत है। यह उपलब्धि हमारे लिए अत्यंत गौरव और हर्ष का विषय है, और इसमें आपके सहयोग को हम सदैव स्मरण रखेंगे।

ईश्वर से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें और इसी प्रकार शिक्षा–जगत को अपने मार्गदर्शन से आलोकित करते रहें।

आभारी,

एम.के.एस. कॉलेज, महाविद्यालय परिवार

महाकवि कालिदास सूर्यदेव स्नातकोत्तर महाविद्यालय
त्रिमुहान-चंदौना, दरभंगा
महाकवि कालिदास सूर्यदेव महाविद्यालय को स्नातकोत्तर महाविद्यालय का दर्जा प्रदान करने के अवसर पर महाविद्यालय परिवार माननीय कुलपति, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है एवं सादर अभिनंदन करता है।
मुख्य संरक्षक
प्रो- संजय कुमार चौधरी
माननीय कुलपति
एल.एन. एम. यू., दरभंगा, बिहार
भवदीय
महाविद्यालय परिवार
एम.के.एस. पी. जी. कॉलेज, त्रिमुहान-चंदौना, दरभंगा
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की स्नातकोत्तर अंगीभूत इकाई)

पल्लव प्रकाश

महाकवि कालिदास सूर्यदेव महाविद्यालय

ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की अंगीभूत स्नातकोत्तर इकाई

त्रिमुहान-चन्दौना–847303(दरभंगा)

(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा ग्रेड–बी प्राप्त)

www.mkscollege.ac.in Email: mksc@lnmu.ac.in

mkscollegechandauna209@gmail.com

Mobile No.

पत्रांक– 169/26 दिनांक: 03/07/2026

प्रेषक,

प्राचार्य

सेवा में,

शुभ संदेश

एम. के. एस कॉलेज, चंदौना अपनी प्रथम वार्षिक पत्रिका "पल्लव–प्रकाश" प्रकाशित करने जा रहा है।

संस्थाओं की पत्रिकाएँ रचनात्मकता, लेखन कौशल और साहित्यिक प्रतिभा को निखारने एवं सर्वांगीण विकास का एक सरल माध्यम होती है । आशा है कि प्रकाशित होने वाली यह प्रथम पत्रिका उपयोगी सिद्ध होगी।

इन्हीं कामनाओं के साथ पत्रिका ''पल्लव–प्रकाश'' के सफल एवं सारगर्भित प्रकाशन हेतु सभी संवर्गों को साधुवाद ज्ञापित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका प्रकाश स्तंभ के समान सभी के ज्ञानवर्धन में उपयोग होगी।

डॉ. सिद्धार्थ शंकर सिंह

प्राचार्य, एम. के. एस कॉलेज, चंदौना

पल्लव प्रकाश

सम्पादक की कलम से...

किसी भी सभ्य समाज की उन्नति का सबसे बड़ा सूचक उसका शिक्षा के प्रति समर्पण, शिक्षा–व्यवस्था की गुणवत्ता तथा शिक्षण की अनिवार्यता के प्रति उसकी सजगता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सुदृढ़ शैक्षणिक संस्थानों का विकास तथा उनमें ज्ञान–संक्रमण के प्रति समर्पित शिक्षकों की नियुक्ति अत्यंत आवश्यक है। इसी महान संकल्पना के आधार पर विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों की स्थापना की जाती है। ये संस्थान केवल ज्ञानार्जन के केंद्र नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व–निर्माण की आधारशिला भी हैं, जहाँ उनमें उत्तम संस्कार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवीय मूल्य तथा राष्ट्रीय चेतना का विकास होता है। महाविद्यालय का वातावरण ऐसा होना चाहिए कि विद्यार्थी माँ की गोद की भाँति स्वयं को सुरक्षित, निश्चिंत एवं निर्भय अनुभव करें। शिक्षक कुम्हार के समान बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार के स्नेहपूर्ण स्पर्श तथा आवश्यक अनुशासन के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को सुंदर आकार प्रदान करें। यही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है।

इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति में महाविद्यालय–पत्रिका की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करती है। कथा, कहानी, कविता, लघु–लेख, हास्य–व्यंग्य, समसामयिक विषयों पर विचार तथा विविध साहित्यिक एवं बौद्धिक रचनाओं के माध्यम से विद्यार्थी अपनी सृजनात्मक क्षमता का परिचय देते हैं। इन रचनाओं में जहाँ विद्यार्थियों का व्यक्तित्व प्रतिबिंबित होता है, वहीं शिक्षकों के मार्गदर्शन और संस्थान की शैक्षणिक संस्कृति का भी स्पष्ट दर्शन होता है। इस प्रकार महाविद्यालय–पत्रिका संस्थान की वार्षिक उपलब्धियों, विकास–यात्रा तथा रचनात्मक गतिविधियों का सजीव दस्तावेज बन जाती है।

हमारे आदरणीय प्रधानाचार्य महोदय इस तथ्य से भली–भाँति परिचित हैं। उनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं दूरदर्शी नेतृत्व के फलस्वरूप इस महाविद्यालय–पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि पत्रिका का नियमित प्रकाशन निरंतर होता रहना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों को अपनी अभिव्यक्ति, चिंतन एवं रचनात्मक विकास के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते रहें। वास्तव में किसी भी व्यक्ति का विकास तीन स्तरों पर परखा जाता है प्रथम, जब वह लेखन के योग्य बनता है; द्वितीय, जब वह स्वयं लिखता है; और तृतीय, जब उसकी रचनाओं का समाज द्वारा मूल्यांकन एवं समीक्षा की जाती है। इन तीनों सोपानों से गुजरकर ही व्यक्ति परिपक्व, सम्मानित एवं समाजोपयोगी बनता है। अतः पठन, लेखन और प्रकाशन इन तीनों को प्रोत्साहित करने के लिए महाविद्यालय–पत्रिका का नियमित प्रकाशन अनिवार्य है।

मैं अपने प्रिय विद्यार्थियों से यह भी कहना चाहूँगी कि सफलता कभी अंतिम नहीं होती और असफलता भी जीवन का अंत नहीं होती। जीवन–पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहने का साहस ही वास्तविक सफलता का आधार है। सफलता प्राप्त करने की उतावली में अनैतिक एवं अनुचित साधनों का सहारा कभी नहीं लेना चाहिए। परंपराओं, नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं का

ह्रास करके अर्जित सफलता स्थायी नहीं होती। इसलिए आवश्यक है कि युवा वर्ग अंधी प्रतिस्पर्धा का हिस्सा बनने के बजाय अपने व्यक्तित्व में मानवीय गुणों, नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास करे। संचार–क्रांति के इस युग में सम्पूर्ण विश्व एक वैश्विक परिवार का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। विश्व के किसी भी कोने में घटित घटना या व्यक्त विचार कुछ ही क्षणों में सम्पूर्ण मानव समाज तक पहुँच जाते हैं। इनका प्रभाव विशेष रूप से युवाओं पर पड़ता है। इसलिए आवश्यक है कि वे अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा प्रदान करें, राष्ट्र–निर्माण में सक्रिय योगदान दें तथा अध्ययन और लेखन की सतत आदत विकसित करें। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आप सभी विद्यार्थियों ने इस पत्रिका के लिए उत्साहपूर्वक अपनी रचनाएँ भेजीं तथा विविध विषयों पर अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया। हमारे सम्मानित शिक्षकगण ने भी समान उत्साह एवं सहयोग प्रदान किया। इसके लिए आप सभी के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता एवं धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

प्रधानाचार्य महोदय के प्रति सम्पादक मंडल विनम्रतापूर्वक अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है। उनका मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं प्रेरणा ही इस पत्रिका के प्रकाशन का मूल आधार है। प्रथम अंक होने के कारण यदि कहीं कोई त्रुटि रह गई हो तो उसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। आपके बहुमूल्य सुझाव एवं रचनात्मक सहयोग का भविष्य में भी हार्दिक स्वागत रहेगा।

— डॉ. ममता पाण्डेय

सह प्राध्यापिका, संस्कृत विभाग

एम. के. एस. कॉलेज, त्रिमुहान–चंदौना, दरभंगा (बिहार)

पल्लव प्रकाश

अनुक्रम

1.	वर्तमान नारी समाज के लिए वाल्मीकि रामायण की प्रासंगिकता	डॉ. ममता पाण्डेय	1-2
2.	आत्मा का प्रकाश	डॉ. लाल बाबू सहनी	3
3.	मानवीय संवेदनाओं का क्षय	डॉ. विनय कुमार	4-6
4.	स्टार्टअप का सपना: एक प्रेरक कहानी	डॉ. मुकेश कुमार	7
5.	नाथुला पास (यात्रा वृतांत)	डॉ. ज्योतीन्द्र कुमार	8-9
6.	सामाजिक परिवर्तन और युवा	डॉ. मनीष यादव	10
7.	जलवायु परिवर्तन के अध्ययन में सांख्यिकी की भूमिका	डॉ. जयप्रकाश झा	11-12
8.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोजगार संरचना में परिवर्तन	डॉ. मो. तसलीम	13-14
9.	वर्तमान परिवेश में योग	डॉ. ओम प्रकाश प्रभाकर	15-16
10.	"कितना अच्छा आलय है"	डॉ. शशि भूषण शशि	17
11.	नई शिक्षा नीति 2020 और उच्च शिक्षा में कौशल विकास एवं रोजगारपरकता	डॉ.मो० तारिकुर रहमान	18
12.	सूर्य : ऊर्जा का विशाल स्रोत	डॉ. ज्योतीन्द्र कुमार	19-20
13.	विकसित भारत 2047 : लोकतंत्र, सुशासन और युवाओं की भूमिका	डॉ. आफताब आलम	21-22
14.	महिला सशक्तिकरण और भारतीय राजनीति : समानता से नेतृत्व तक की यात्रा	डॉ. मिथिलेश कुमार	23-24
15.	आखिरी दीपक: एक प्रेरक हिन्दी साहित्यिक कहानी	डॉ. बबिता कुमारी	25
16.	बाल्य शिक्षा और उसकी देखभाल	डॉ उमाशंकर कुमार	26
17.	आत्मविश्वास की उड़ान: एक प्रेरक कहानी	डॉ. प्रदीप कुमार	27-28
18.	फूड टेक्नोलॉजी : भविष्य का हाई–प्रोफाइल करियर	सुधांशु रंजन झा	29-31
19.	दोस्ती (Friendship)	Masoom Kumari	32
20.	भूख का चमत्कार	Mohammad Ismail	33-34
21.	आखिर कैसे पैदा हो रुपवती मिल्की व्हाईट कन्याएँ ?	निधि कुमारी	35

पल्लव प्रकाश

22.	प्राणिविज्ञान – जीवन की कहानी	Sakrin Fatma	36
23.	दूध – जीवन का आधार	Sidhu Kumari	37
24.	भौतिकी – प्रकृति की भाषा	Amarnath Thakur	38
25.	समय का महत्व	Chanchal Kumari	39-40
26.	आधुनिकता का जाल स्मार्टफोन, प्लास्टिक का सच और कन्फ्यूज्ड हार्मोन्स	Chandan Kumar	41-42
27.	जल प्रबंधन : सतत विकास, वैज्ञानिक नवाचार एवं भविष्य की चुनौतियाँ	समीर नंदन	43-45
28.	विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय के प्रणेताः युगद्रष्टा पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य	सुधांशु कश्यप	46-48
29.	मन की डायरी, काश	Sanjana Kumari	49-51
30.	ज़िंदगी – सपनों की उड़ान	Mahto Gunjan Kumari Jitendra	52
31.	मेहनत की असली जीत	निशा कुमारी	53
32.	Muslim Female Students of Bihar and Higher Education in Physics: A Data-Based Analytical Study	Arshia Tazeen	54-56
33.	इंसानियत	Shayka Asif	57
34.	जादुई बीज का रहस्य	शीतल कुमारी	58-59
35.	शिक्षा	अभिनव कुमार गिरि	60
36.	शिक्षा व्यवस्था	गौरव कुमार सिंह	61
37.	मेरा महाविद्यालय : एम.के.एस. कॉलेज, चंदौना	श्वेता कुमारी	62
38.	The Little Canvas		63-64
39.	झरोखे से		65-85

वर्तमान नारी समाज के लिए वाल्मीकि रामायण की प्रासंगिकता

डॉ. ममता पाण्डेय
सह–प्राध्यापिका, संस्कृत विभाग
एम.के.एस. कॉलेज, चंदौना

महान रचनाकार प्रत्येक युग में प्रासंगिक होता है। कोई रचनाकार इसलिए महान कहलाता है क्योंकि उसकी रचना की प्रासंगिकता कभी समाप्त नहीं होती। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण केवल एक महाकाव्य नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और आदर्श जीवन–दर्शन का अमूल्य ग्रंथ है। इसमें निहित इतिहास–बोध भविष्य–निर्माण की स्पष्ट रूपरेखा प्रस्तुत करता है तथा उसका समसामयिक जीवन से अभिन्न संबंध है। यही कारण है कि वाल्मीकि रामायण आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने रचनाकाल में था।

युग परिवर्तन के साथ समाज के मूल्य और परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। प्रत्येक युग अपने नए जीवन–मूल्य स्थापित करता है। इसलिए प्राचीन साहित्य का नवीन दृष्टिकोण से पुनर्मूल्यांकन आवश्यक होता है। समालोचना और पुनर्पाठ के माध्यम से ही पुरातन साहित्य नवीन स्वरूप धारण कर सर्वजन–ग्राह्य एवं उपयोगी बनता है।

रामायणकालीन समाज में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति सम्मानजनक एवं गौरवपूर्ण थी। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने, विचार व्यक्त करने तथा धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में सहभागिता का अधिकार प्राप्त था। सीता, कौशल्या, कैकेयी, तारा तथा मंदोदरी जैसी स्त्रियाँ शिक्षित, बुद्धिमती और संस्कृत–भाषा में पारंगत थीं। वे नीति, धर्म और कर्तव्य की गहन समझ रखती थीं। उस समय विधवाओं को भी अपनी संपत्ति पर अधिकार प्राप्त था तथा उनके लिए मांगलिक कार्यों में किसी प्रकार का निषेध नहीं था।

रामायण में नारी के लिए ह्री,श्री और कीर्ति जैसे सम्मानसूचक संबोधनों का प्रयोग इस तथ्य का प्रमाण है कि उस युग में नारी को उसके शील, शुचिता, सहिष्णुता, सेवा–भाव, त्याग, पातिव्रत्य, आत्मसम्मान तथा वात्सल्य जैसे गुणों के कारण समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। विशेष रूप से माता सीता का तेज, धैर्य, स्वाभिमान और आदर्श चरित्र आज भी भारतीय नारी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। सीता की तेजस्विता एवं स्वाभिमान रामायणकार का दिया हुआ अमोघ मन्त्र है नारी जाति के लिए। आज की नारी इन गुणों के कारण सीता के साथ तादात्म्य स्थापित करती है। रामायणकार ने अपनी रचना में नायक और नायिका दोनों को चारित्रिक विकास का समान अवसर उपलब्ध कराया है। सीता के चारित्रिक गुणों पर मुग्ध कवि अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं-

''सीतायाश्चरितं महत''।

यद्यपि वर्तमान समय में महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, फिर भी समाज दहेज–प्रथा, बाल–विवाह, लैंगिक भेदभाव, अशिक्षा तथा महिलाओं के प्रति हिंसा जैसी अनेक सामाजिक कुरीतियों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सका है। ऐसे समय में वाल्मीकि

रामायण में प्रतिपादित नारी–सम्मान, शिक्षा, समानता, कर्तव्यबोध और नैतिक मूल्यों की शिक्षा अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है।

वर्तमान समाज के समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि महिलाओं को सम्मान, समान अवसर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाए। जब नारी को उसका उचित गौरव और अधिकार प्राप्त होंगे, तभी परिवार, समाज और राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव होगा। इस प्रकार वाल्मीकि रामायण केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि आदर्श मानवीय जीवन, सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों की अमूल्य धरोहर है, जिसकी प्रासंगिकता आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है।

प्रेरक प्रसंग
"प्रकृति हमारी धरोहर है"

एक दिन आश्रम में एक युवक गांधीजी से मिलने आया। उसने देखा कि बापू हाथ–मुँह धोने के बाद नल को तुरंत बंद कर देते हैं और आवश्यकता से अधिक पानी का उपयोग नहीं करते।

युवक ने उत्सुकतावश पूछा, "बापू, आप इतनी सावधानी क्यों बरतते हैं? थोड़े–से पानी से क्या अंतर पड़ता है?"

गांधीजी ने शांत स्वर में उत्तर दिया, "बेटा, संसार में कोई भी संसाधन इतना अधिक नहीं कि उसे व्यर्थ किया जाए। यदि प्रत्येक व्यक्ति यह सोचकर थोड़ा–थोड़ा पानी बचाए कि 'मेरे बचाने से क्या होगा', तो एक दिन यही छोटी–छोटी बर्बादियाँ बड़े संकट का कारण बन जाएँगी।"

उन्होंने आगे कहा, "सच्ची सेवा केवल मनुष्यों की नहीं, बल्कि प्रकृति की रक्षा करना भी है।"

उस दिन युवक ने संकल्प लिया कि वह स्वयं भी जल का विवेकपूर्ण उपयोग करेगा और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करेगा।

प्रेरणाः "जल की रक्षा करना केवल पर्यावरण संरक्षण नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।"

आत्मा का प्रकाश

डॉ. लाल बाबू सहनी
सहायक प्राध्यापक
एम. के. एस. कॉलेज, चंदौना

न मैं केवल यह तन–मन हूँ,
न केवल मेरा नाम।
अंतर में जो ज्योति प्रज्वलित,
वही मेरा निज धाम॥
सागर, पर्वत, नभ और धरती,
सबमें एक ही प्राण।
वेदांत का अमर संदेश है,
एकत्व ही है ज्ञान॥
सुख–दुःख आते–जाते रहते,
ज्यों मेघों का आवागमन।
आत्मा का निर्मल सूर्य सदा,
करता जीवन आलोकित क्षण॥
न द्वेष रहे, न कोई भय हो,
न मन में हो अभिमान।
प्रेम, करुणा, सत्य और सेवा,
यही मनुष्य की पहचान॥
जब स्वयं को जान लिया तो,
मिट गया सारा अज्ञान॥
"अहं ब्रह्मास्मि" की अनुभूति
यही है सच्चा वेदांत–ज्ञान॥

मानवीय संवेदनाओं का क्षय

डॉ. विनय कुमार
सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान विभाग
एम.के.एस. कॉलेज, चंदौना

वर्तमान समय में मनुष्य ने अंतरिक्ष तक अपनी पहुँच बना ली है। विज्ञान, तकनीक और आधुनिकता की ओर अग्रसर मनुष्य ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक विकसित कर अपने जीवन को काफी सुविधाजनक बना लिया है, लेकिन इसके बावजूद एक प्रश्न बार–बार हमारे सामने उभरने लगा है कि क्या आधुनिकता की इस दौड़ में मनुष्य अपनी संवेदनाएँ खोता जा रहा है।

क्योंकि, आज के दौर में लोग पीड़ितों को देखकर मदद के लिए आगे नहीं बढ़ते, उनका वीडियो बनाने लगते हैं। पारिवारिक रिश्तों में दूरियाँ बढ़ने लगी हैं। लोग अपनी संवेदनशीलता का गलत तरीके से इस्तेमाल करने लगे हैं। पड़ोसी एक–दूसरे से अपरिचित हैं और सामाजिक जीवन में आत्मीयता तो जैसे लगभग शून्य होती जा रही है।

मनुष्य को समस्त जीव–प्राणियों में उसकी बुद्धि, करुणा, प्रेम, दया, सहनशीलता, सहयोग, त्यागभाव आदि मानवीय गुणों के कारण उसे सर्वश्रेष्ठ माना गया था। लेकिन ज्ञान, शक्ति, धन, प्रतिष्ठा आदि से सम्पन्न होने के बावजूद लोगों के अंदर से मानवीय संवेदनाएँ लगभग जैसे समाप्त होती जा रही हैं। यदि यही स्थिति बनी रही तो समाज में न केवल विश्वास, सहयोग और भाईचारे की भावना समाप्त हो जाएगी, बल्कि मानव मात्र एक मानवीय आकृति बनकर अपनी सुख–सुविधाओं के लिए संघर्ष करता नजर आएगा।

मानवीय संवेदनाओं का क्षय आज बहुत गंभीर है।

''किसी अनजान व्यक्ति की आँखों में आँसू देखकर यदि भावुक हृदय भी द्रवित हो उठे, किसी की सफलता में हमें खुशी मिले और किसी संकटग्रस्त व्यक्ति की सहायता करने का भाव स्वतः जाग जाए यही मानवीय संवेदना है।''

मानव हृदय से मानवीय संवेदनाओं का विलोप केवल एक सामाजिक समस्या नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक चुनौती भी बनती जा रही है।

मानवीय संवेदनाओं में ह्रास के प्रमुख कारण :

भौतिक सुख–सुविधाओं की आकांक्षा और अत्यधिक सफलता की महत्त्वाकांक्षा ने व्यक्ति को इतना व्यस्त कर दिया है कि उन्हें अपने लिए किसी और की समस्याएँ दिखाई नहीं देतीं। ऐसी स्थिति में सहयोग और सहानुभूति जैसी भावनाएँ स्वतः कमजोर होने लगी हैं।

वर्तमान समय में व्यवसाय, शिक्षा और रोजगार जैसे क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा का इतना जोर बढ़ गया है कि संवेदनाओं के लिए कहीं जगह ही नहीं बचती।

डिजिटल तकनीक ने जहाँ लोगों को निकटता की ओर अग्रसर किया है, वहीं इसके दुष्परिणाम भी सामने आए हैं। मोबाइल ने लोगों की दूरियाँ तो मिटाई हैं, परंतु वास्तविक रिश्तों की अपेक्षा आभासी रिश्तों से लोग अधिक प्रभावित होने लगे हैं।

संयुक्त परिवार के विघटन और एकल परिवार के निर्माण ने कई सामाजिक, नैतिक और व्यावहारिक गुणों तथा संस्कारों को न केवल विलुप्ति के कगार पर पहुँचा दिया है बल्कि सहयोग, परोपकार और कृतज्ञता जैसे शब्दों के मायने ही बदल दिए हैं।

आज के समय में पति और पत्नी दोनों नौकरी करते हैं। बच्चों के अकादमिक और शारीरिक विकास तथा आवश्यकताओं की तरफ तो उनका ध्यान जाता है, परंतु मानसिक विकास को समझने, महसूस करने और सही मार्गदर्शन देने के लिए उनके पास समय नहीं होता।

विद्यालयों में भी संवेगात्मक विकास की तो बात की जाती है, लेकिन ज्ञान और कौशल विकास पर पर्याप्त ध्यान देते हुए नैतिक मूल्यों तथा चरित्र विकास की बातों की वह अनदेखी कर देते हैं। यदि स्कूली जीवन से ही बच्चों में सहयोग, करुणा और टीमवर्क जैसी भावनाओं को विकसित करने पर ध्यान दिया जाए तो एक संवेदनशील व्यक्तित्व का विकास हो सकता है।

मानवीय संवेदनाओं के ह्रास के दुष्परिणाम

संवेदनाओं की कमी व्यक्तिगत रूप से ही नहीं, बल्कि सामाजिक रूप से भी लोगों को प्रभावित करती है। सर्वप्रथम परिवार में इसके दुष्परिणाम दिखते हैं। नई पीढ़ियों के बीच बातचीत कम हो जाती है, फिर भावनात्मक दूरी बढ़ने लगती है। फलतः सहयोग और विश्वास का धागा भी कमजोर पड़ने लगता है।

संवेदनहीन समाज में, जहाँ एक ओर अपराध, हिंसा और शोषण जैसी समस्याएँ बढ़ सकती हैं, वहीं दूसरी ओर मानसिक स्वास्थ्य पर भी इसका गहरा असर पड़ता है। 'अकेलापन', 'अवसाद' और 'तनाव' जैसी मानसिक समस्याएँ केवल इसलिए बढ़ने लगती हैं क्योंकि लोगों का भावनात्मक जुड़ाव और अपनापन कम मिलने लगा है।

क्या केवल आधुनिकता ही जिम्मेदार है?

संतुलित समायोजन से किसी भी समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है। यह आधुनिकता संवेदनाओं के ह्रास का कारण नहीं है, बल्कि आधुनिकीकरण की अंधी दौड़ में शामिल होने के लिए अपने मानवीय मूल्यों को खोते चले जाना, संवेदनाओं के साथ समझौता कर लेना है। इसलिए आधुनिकता और मानवीय संवेदनाओं के बीच संतुलित समायोजन ही विकास का सही दृष्टिकोण माना जा सकता है।

मानवीय संवेदनाओं को कैसे विकसित किया जा सकता है?

सर्वप्रथम परिवार में पारिवारिक अंतःक्रिया को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। बच्चों में आदर, सम्मान और सहयोग जैसी भावनाओं को विकसित करने हेतु उन्हें पारिवारिक आयोजनों में भी शामिल करें। कोशिश करें कि सदस्यों के बीच संवादहीनता की स्थिति उत्पन्न न हो।

विद्यालयों में नैतिक शिक्षा, सामुदायिक गतिविधियों और सामाजिक सेवा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। सोशल मीडिया पर बिताए जाने वाले समय को सीमित करके वास्तविक संबंधों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। आज की सरकारी कार्यक्रम जैसे वृक्षारोपण, बुजुर्गों की सेवा और पर्यावरण संरक्षण जैसी गतिविधियों में भी सक्रिय रहने की कोशिश होनी चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि यदि हम दूसरों के केवल दुःख और संघर्षों की आदत विकसित कर लेते हैं, तो यह किसी भी तरह की आर्थिक सहायता से कहीं अधिक लाभदायक होता है।

भारतीय संस्कृति ने सदैव ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना को महत्व दिया है। यदि हम महापुरुषों द्वारा दिए गए प्रेम, दया, क्षमा और सेवा को अपने व्यवहार में अपना लें तो संवेदनशीलता का पुनः विकास हो सकता है।

निष्कर्षतः, मानवीय संवेदनाओं का ह्रास आज के समय की एक बहुत बड़ी सामाजिक समस्या है, जो स्वार्थ, उपभोक्तावाद, मानवीय मूल्यों की उपेक्षा, परिवारों के बीच बढ़ती दूरी, सामाजिक जिम्मेदारियों की अवहेलना और डिजिटल गतिविधियों तथा भौतिक सुविधाओं के प्रति आकर्षण का परिणाम है।

एक विकसित राष्ट्र केवल आर्थिक विकास से नहीं, बल्कि मानवीय सोच और सामाजिक उत्तरदायित्व से बनता है। अतः हमें स्वयं से शुरुआत कर आपसी प्रेम, सहयोग और सहानुभूति को जोड़ने का एक संवेदनशीलता का पुनः निर्माण करना होगा।

''विज्ञान मनुष्य को शक्तिशाली बना सकता है, परंतु संवेदनाएँ ही उसे महान बनाती हैं।''

स्टार्टअप का सपना: एक प्रेरक कहानी

डॉ. मुकेश कुमार
सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग
एम. के. एस. कॉलेज, त्रिमुहान–चंदौना

कॉलेज के प्रांगण में अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के बीच भविष्य को लेकर चर्चा चल रही थी। कोई सरकारी नौकरी की तैयारी करना चाहता था, तो कोई निजी कंपनी में करियर बनाना चाहता था। इन्हीं छात्रों के बीच बैठा आदित्य शांत था। उसके मन में एक अलग ही सपना पल रहा था। वह नौकरी नहीं, बल्कि अपना स्टार्टअप शुरू करना चाहता था।

आदित्य का मानना था कि यदि शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना हो, तो समाज में नए अवसरों का निर्माण कैसे होगा? वाणिज्य की पढ़ाई के दौरान उसने सीखा था कि हर समस्या अपने भीतर एक नए व्यवसाय की संभावना भी छिपाए रहती है। उसने अपने गाँव के किसानों की एक बड़ी समस्या देखी। उनकी उपज अच्छी होती थी, लेकिन उचित बाज़ार और सही मूल्य नहीं मिल पाता था। बिचौलियों के कारण किसानों का लाभ कम हो जाता था।

आदित्य ने अपने कुछ मित्रों के साथ मिलकर एक डिजिटल मंच तैयार किया, जहाँ किसान सीधे ग्राहकों और छोटे व्यापारियों से जुड़ सकते थे। शुरुआत में अनेक कठिनाइयाँ आईं। पूँजी कम थी, तकनीकी अनुभव सीमित था और लोगों का विश्वास जीतना आसान नहीं था। कई बार ऐसा लगा कि यह सपना अधूरा रह जाएगा, लेकिन उसने हार नहीं मानी। उसने अपनी गलतियों से सीखा, योजनाओं में सुधार किया और धैर्य के साथ आगे बढ़ता रहा।

धीरे–धीरे किसानों का भरोसा बढ़ने लगा। उन्हें अपनी उपज का बेहतर मूल्य मिलने लगा और ग्राहकों को ताज़ी एवं गुणवत्तापूर्ण वस्तुएँ उचित कीमत पर मिलने लगीं। कुछ ही समय में यह छोटा प्रयास एक सफल स्टार्टअप में बदल गया। आसपास के कई युवाओं को भी रोजगार मिला और स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई गति मिली।

कॉलेज के दीक्षांत समारोह में जब आदित्य को "युवा उद्यमी सम्मान" से सम्मानित किया गया, तो उसने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा, "व्यवसाय का उद्देश्य केवल लाभ कमाना नहीं, बल्कि समाज की किसी वास्तविक समस्या का समाधान करना भी है। जब उद्यम सेवा और ईमानदारी के साथ जुड़ता है, तभी वह स्थायी सफलता प्राप्त करता है।"

उसकी बातें सुनकर अनेक विद्यार्थियों ने निश्चय किया कि वे भी केवल अवसर खोजने वाले नहीं, बल्कि अवसर बनाने वाले बनेंगे। उस दिन कॉलेज के शिक्षकों ने महसूस किया कि शिक्षा की वास्तविक सफलता तब है, जब वह युवाओं को आत्मनिर्भर, नवाचारी और समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक बनाए।

नाथुला पास (यात्रा वृतांत)

डॉ. ज्योतीन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक, भौतिकी विभाग
एम. के. एस. महविद्यालय, चंदौना दरभंगा

जीवन एक पर्यटन है और मनुष्य की मूल प्रवृत्ति पर्यटक है। व्यक्ति प्रगति का आकांक्षी होता है। ज्ञान प्राप्त करने, नवीनता को जीवन में सम्मिलित करने, विश्व की संस्कृति को आत्मसात करने, विभिन्न भाषायी मिठास को महसूस करने एवं लोक परंपराओं को जानने समझने के लिए पर्यटन आवश्यक है।

भौतिकी में हम सभी त्वरण से परिचित हैं। स्थिरता को प्रगति नहीं माना जाता है। कुछ नया देखने के लिए उत्साह जरूरी है, जिससे सुखद अनुभूति मिलनी शुरू होगी। यही अनुभूति जीवन का त्वरण है। पर्यटन अर्थात घूमना फिरना।

पहाड़ की चोटी के किसी मोहाने पर खड़े होकर विराट प्रकृति के नजारे को देखने का रोमांच, चोटी से नीचे घाटियों, बादलों और दूर तक फैली पर्वत श्रृंखलाओं का विहंगम दृश्य जीवन का एक अद्‌भुत अनुभव है, जो असीम आनंद देता है।

घुमक्कड़ी मेरे स्वभाव में शामिल रही है। लगभग 14,500 फीट की हाइट पर भारत और चीन की सीमाएँ यहाँ मिलती हैं। फरवरी का महीना और मेरा टूर प्लान : नाथुला पास।

यूँ तो मैं पंजाब, जम्मू कश्मीर, दार्जिलिंग, मणिपुर, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, ओडिसा, उत्तराखंड आदि की यात्रा कर चुका, लेकिन असल रोमांच नाथुला आकर महसूस किया।

भारत–चीन सीमाओं को जोड़ने वाला नाथुला पास दुनिया का एक ऐसा सीमा क्षेत्र है जहाँ दो देशों की सीमा (भारत के सिक्किम,चीन के तिब्बत) इतनी करीब है कि सेना के साथ–साथ सिक्किम जाने वाले पर्यटक भी सीमा क्षेत्र की प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले सकते हैं। बर्फ से ढकी ऊँची–ऊँची पहाड़ियाँ रोमांचित करती हैं।

इतनी कठिन और दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियों (हिमालय के ऊँचे इलाके, ठंड और दुर्गम रास्ते) के बावजूद भारत–चीन युद्ध की संभावना कैसे बलवती हुई होगी ? आश्चर्य होता है ! खैर, 1962 में चीन की सेनाएँ इसी रास्ते से भारत में घुसी। यह तिब्बत और सिक्किम का व्यापारिक मार्ग था।

सुरक्षा की दृष्टि से,1975 के जनमत संग्रह के बाद, भारतीय सेना के प्रयासों से इसे भारत में पूरी तरह शामिल किया गया (22 वां राज्य), जिससे पूर्वोत्तर राज्यों की सुरक्षा मजबूत हुई।

जहाँ इन ऊँची बर्फीली चोटियों पर पहुँचना बेहद कठिन और जोखिम भरा था, वहीं आज गंगटोक से नाथूला का मार्ग एक सुलभ और शानदार पर्यटन अनुभव बन गया है। सीमा सड़क संगठन द्वारा इस मार्ग को बेहतर बनाने से अब यात्री आसानी से 14,500 फीट से अधिक की ऊँचाई पर स्थित इस ऐतिहासिक दर्रे तक पहुँच सकते हैं। आम नागरिक बेफिक्र होकर जीवन यापन करते

हैं। सेना के जवान हर संभव मदद करते हैं। राशन से लेकर दवा तक उपलब्ध कराते हैं। यहाँ के बच्चों के लिए सैनिक संगठन के द्वारा विद्यालयों की स्थापना भी की गई है।

गंगटोक से नाथुला पहुंचने में तकरीबन 4 से 5 घंटे का समय लग जाता है। फरवरी में पूरा नाथुला क्षेत्र बर्फ की मोटी चादर से ढका रहता है, जो इसे किसी स्वर्ग से कम नहीं बनाता। ऊँचे पहाड़ों के पीछे से सूर्यास्त का नजारा अविस्मरणीय होता है, लेकिन शाम होते–होते तापमान –15° C तक गिर जाता है। यहाँ सांस लेने में दिक्कत होने लगती है। पर्यटक ऑक्सीजन के सिलेंडर भी रखते हैं, क्योंकि अधिक ऊँचाई पर वायुमंडलीय दबाव कम होने के कारण ऑक्सीजन का स्तर कम हो जाता है। कम ऑक्सीजन के कारण सिरदर्द, घबराहट, उल्टी, थकान या माउंटेन सिकनेस जैसी समस्याओं से तुरंत राहत मिल सके ऑक्सीजन सिलेंडर आवश्यक है। पर्यटकों को विटामिन सी और किशमिश खाने की सलाह दी जाती है। मैं तो आंवला साथ लेकर गया था।

यहाँ की हिमाच्छादित मनोहारी पर्वत श्रृंखलाएं आकर्षित करती हैं।

हिमालय का शाब्दिक अर्थ ही 'बर्फ का घर' है। यहाँ की ऊँची चोटी कंचनजंगा (भारत की सबसे ऊँची) वर्ष भर बर्फ की सफेद चादर में लिपटी रहती हैं। नाथुला आने के लिए सैनिक मुख्यालय से अनुमति आवश्यक है, बिना अनुमति प्रवेश नहीं कर सकते। यह यात्रा काफी घुमावदार है और पर्वत श्रृंखलाओं के बीच यात्रा करना हमेशा के लिए यादगार बन जाता है। यहाँ पहुंचने पर चीन की सेनाओं और उनकी गतिविधियों को दूर से देखा जा सकता है।

नाथूला दर्रा से वापसी के दौरान छंगू झील में रुकना और वहाँ के माहौल का अनुभव करना वास्तव में एक रोमांचक और यादगार अनुभव है, विशेषकर ठंड के दिनों में जब झील जम जाती है। जमी हुई झील पर याक की सवारी और झील के पास ही छोटे स्टॉल पर गरमा–गरम मैगी, मोमोज और चाय का आनंद लेने का अपना ही मजा है। यह यात्रा प्रकृति की शांति, विशालता और रोमांच का अनूठा मिश्रण है।

1968 में शहीद हुए भारतीय सेना के सिपाही हरभजन सिंह को समर्पित बाबा हरभजन सिंह मंदिर दर्शन के उपरांत हम वापस लौट आए। यह एक आनंदमय यात्रा थी।

प्रेरक प्रसंग

एक छात्र का संकल्प

एक महाविद्यालय में पर्यावरण दिवस पर जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई। एक छात्र ने संकल्प लिया कि वह अपने घर और पड़ोस में पानी की बर्बादी नहीं होने देगा।

उसने सबसे पहले टपकते नलों की मरम्मत करवाई, वर्षा जल संचयन की व्यवस्था बनाई और लोगों को जागरूक किया। कुछ महीनों बाद पूरे मोहल्ले में पानी की खपत कम हो गई।

जब उससे सफलता का रहस्य पूछा गया, तो उसने कहा, "मैंने दुनिया बदलने की कोशिश नहीं की, केवल अपनी जिम्मेदारी निभाई।"

संदेशः समाज में परिवर्तन की शुरुआत एक जागरूक व्यक्ति से होती है।

पल्लव प्रकाश

सामाजिक परिवर्तन और युवा

डॉ. मनीष यादव
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग
एम. के. एस. कॉलेज, त्रिमुहान–चंदौना, दरभंगा (बिहार)

सामाजिक परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। समय, परिस्थितियों, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा तथा सांस्कृतिक मूल्यों के प्रभाव से समाज निरंतर बदलता रहता है। समाजशास्त्र में सामाजिक परिवर्तन का अर्थ सामाजिक संरचना, संस्थाओं, मूल्यों, व्यवहारों और जीवन–शैली में होने वाले परिवर्तन से है। वर्तमान समय में यह परिवर्तन पहले की तुलना में अधिक तीव्र गति से हो रहा है। ऐसे दौर में युवा वर्ग सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावशाली वाहक बनकर उभरा है।

भारत विश्व के सबसे युवा देशों में से एक है। यहाँ की बड़ी युवा आबादी देश की सबसे बड़ी शक्ति मानी जाती है। युवाओं में नई सोच, ऊर्जा, रचनात्मकता और परिवर्तन को स्वीकार करने की क्षमता होती है। यही कारण है कि शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, उद्यमिता, राजनीति, सामाजिक सेवा और सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवाओं की सक्रिय भागीदारी समाज को नई दिशा प्रदान कर रही है।

डिजिटल क्रांति ने सामाजिक परिवर्तन की गति को और तेज कर दिया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे आधुनिक साधनों ने ज्ञान और सूचना को सभी तक सुलभ बनाया है। आज का युवा इन माध्यमों के द्वारा सामाजिक जागरूकता फैलाने, नवाचार को बढ़ावा देने तथा जनहित के मुद्दों को प्रभावी ढंग से सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। साथ ही, डिजिटल मंचों का विवेकपूर्ण और जिम्मेदार उपयोग भी समय की आवश्यकता है, क्योंकि इनके दुरुपयोग से भ्रम, सामाजिक तनाव और नैतिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो सकती हैं।

सामाजिक परिवर्तन केवल तकनीकी विकास तक सीमित नहीं है। लैंगिक समानता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय, मानवाधिकार तथा समावेशी विकास जैसे क्षेत्रों में भी युवाओं की भागीदारी उल्लेखनीय है। आज के युवा रूढ़िवादी सोच को चुनौती देकर समान अवसर, लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक समरसता की स्थापना के लिए प्रयासरत हैं। उनकी सकारात्मक सोच और सक्रिय भागीदारी समाज को अधिक न्यायपूर्ण और संवेदनशील बनाने में सहायक सिद्ध हो रही है।

हालाँकि युवाओं के सामने बेरोज़गारी, नशाखोरी, साइबर अपराध, मानसिक तनाव और मूल्य–संकट जैसी अनेक चुनौतियाँ भी हैं। इन समस्याओं से निपटने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, नैतिक मूल्यों का संवर्धन तथा परिवार और समाज का सकारात्मक मार्गदर्शन आवश्यक है। यदि युवाओं को उचित अवसर, संसाधन और प्रेरणा मिले, तो वे इन चुनौतियों को अवसरों में बदल सकते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में युवा सबसे महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति हैं। उनका ज्ञान, कौशल, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व भारत को प्रगतिशील, समावेशी और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है। इसलिए आवश्यक है कि युवाओं की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा प्रदान की जाए, ताकि वे केवल अपने भविष्य का ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का भी निर्माण कर सकें।

जलवायु परिवर्तन के अध्ययन में सांख्यिकी की भूमिका

डॉ० जयप्रकाश झा
सहायक प्राध्यापक, गणित विभाग
एम.के.एस. कॉलेज, चंदौना

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन वैश्विक स्तर पर एक गंभीर चुनौती के रूप में उभरकर सामने आया है। तापमान में वृद्धि, वर्षा के पैटर्न में बदलाव, समुद्र स्तर में वृद्धि तथा चरम मौसमी घटनाओं की बढ़ती आवृत्ति इसके प्रमुख संकेतक हैं। इन परिवर्तनों को समझने, मापने और भविष्य का अनुमान लगाने में सांख्यिकी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सांख्यिकी न केवल जलवायु से संबंधित विशाल आंकड़ों का विश्लेषण करती है, बल्कि वैज्ञानिक निष्कर्षों को प्रमाणित करने का आधार भी प्रदान करती है।

सबसे पहले, सांख्यिकी डेटा संग्रह और वर्गीकरण में सहायता करती है। मौसम विज्ञान केंद्रों, उपग्रहों और समुद्री उपकरणों से प्रतिदिन विशाल मात्रा में तापमान, वर्षा, आर्द्रता और वायुदाब संबंधी आंकड़े प्राप्त होते हैं। इन आंकड़ों को व्यवस्थित रूप से संग्रहीत करना, तालिकाओं एवं ग्राफों में प्रस्तुत करना तथा औसत , माध्यिका और बहुलक जैसी केंद्रीय प्रवृत्ति के मापों द्वारा उनका विश्लेषण करना सांख्यिकी का प्रमुख कार्य है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दीर्घकाल में तापमान या वर्षा में किस प्रकार का परिवर्तन हो रहा है।

दूसरे, प्रवृत्ति विश्लेषण और समय–श्रृंखला विश्लेषण के माध्यम से सांख्यिकी यह बताती है कि किसी क्षेत्र में तापमान वृद्धि की दर क्या है या वर्षा में कमी, वृद्धि का पैटर्न कैसा है। उदाहरण के लिए, यदि पिछले 50 वर्षों के तापमान आंकड़ों का विश्लेषण किया जाए, तो रैखिक प्रतिगमन के माध्यम से तापमान वृद्धि की औसत वार्षिक दर ज्ञात की जा सकती है। इससे भविष्य के तापमान का अनुमान भी लगाया जा सकता है।

तीसरे, सांख्यिकी पूर्वानुमान में अत्यंत उपयोगी है। प्रायिकता सिद्धांत के आधार पर यह आकलन किया जाता है कि भविष्य में बाढ़, सूखा या चक्रवात जैसी घटनाओं की संभावना कितनी है। जलवायु मॉडल सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करके विभिन्न परिदृश्यों के आधार पर अनुमान प्रस्तुत करते हैं। इससे नीति–निर्माताओं को योजनाएँ बनाने में सहायता मिलती है।

चौथे, सांख्यिकी अनिश्चितता का मापन करती है। जलवायु संबंधी भविष्यवाणियों में पूर्ण निश्चितता संभव नहीं होती। इसलिए मानक विचलन त्रुटि–सीमा ऑफल और विश्वास अंतराल जैसे मापों द्वारा यह बताया जाता है कि अनुमान कितने विश्वसनीय हैं। इससे वैज्ञानिक निष्कर्षों की प्रामाणिकता बढ़ती है।

अंततः, सांख्यिकी विभिन्न क्षेत्रोंकृजैसे कृषि, जल संसाधन, स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्थाकृपर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का विश्लेषण करने में भी सहायक है। उदाहरणस्वरूप, फसल उत्पादन और वर्षा के बीच सहसंबंध का अध्ययन कर यह समझा जा सकता है कि बदलती जलवायु कृषि उत्पादन को कैसे प्रभावित कर रही है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन के अध्ययन में सांख्यिकी केवल सहायक उपकरण नहीं, बल्कि वैज्ञानिक अनुसंधान की आधारशिला है। आंकड़ों के सुव्यवस्थित विश्लेषण, प्रवृत्ति निर्धारण, पूर्वानुमान और नीति–निर्माण में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और अपरिहार्य है।

प्रेरक प्रसंग

एक बूंद का मूल्य

एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक अपने विद्यार्थियों के साथ प्रयोगशाला में कार्य कर रहे थे। उन्होंने मेज पर रखा पानी से भरा एक गिलास उठाया और जानबूझकर उसकी कुछ बूंदें फर्श पर गिरा दीं। फिर उन्होंने विद्यार्थियों से पूछा, "क्या इन बूंदों को वापस गिलास में लाया जा सकता है?"

सभी विद्यार्थियों ने उत्तर दिया, "नहीं।"

वैज्ञानिक मुस्कुराए और बोले, "यही जल का सबसे बड़ा सत्य है। जब तक जल हमारे पास है, उसका मूल्य हमें कम दिखाई देता है; परंतु एक बार वह व्यर्थ बह गया, तो उसे उसी रूप में वापस नहीं पाया जा सकता।"

उन्होंने आगे कहा, "यदि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन केवल एक लीटर पानी भी बचाए, तो करोड़ों लीटर जल प्रतिवर्ष संरक्षित किया जा सकता है।"

उस दिन विद्यार्थियों ने संकल्प लिया कि वे स्वयं भी जल की एक–एक बूंद का सम्मान करेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे।

प्रेरणाः "जल की हर बूंद भविष्य की अमूल्य पूंजी है। उसका संरक्षण ही मानवता का संरक्षण है।"

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोजगार संरचना में परिवर्तन

डॉ. मो. तसलीम
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग
एम. के. एस. महविद्यालय, चंदौना दरभंगा

वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था तीव्र तकनीकी परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक प्रमुख प्रेरक शक्ति के रूप में उभरकर सामने आया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित तकनीकेंकृजैसे मशीन लर्निंग, रोबोटिक्स, बिग डेटा विश्लेषण तथा स्वचालित निर्णय प्रणालीकृने उत्पादन, वितरण, विपणन, बैंकिंग, स्वास्थ्य, शिक्षा और प्रशासनिक क्षेत्रों में कार्य–प्रणालियों को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। इन परिवर्तनों का सबसे स्पष्ट प्रभाव श्रम बाजार और रोजगार संरचना पर देखा जा रहा है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कारण पारंपरिक और दोहरावदार कार्यों का स्वचालन तीव्र गति से बढ़ा है। विनिर्माण क्षेत्र में रोबोट आधारित उत्पादन प्रणालियाँ तथा सेवा क्षेत्र में चौटबॉट, वर्चुअल असिस्टेंट और डेटा प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर मानव श्रम का स्थान ले रहे हैं। इससे कम–कौशल और मध्यम–कौशल वाले श्रमिकों के लिए रोजगार अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हो रही है। विशेष रूप से विकासशील देशों में, जहाँ श्रम–प्रधान उद्योगों का वर्चस्व है, वहाँ रोजगार विस्थापन की संभावना अधिक दिखाई देती है।

हालाँकि, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस केवल रोजगार समाप्त नहीं करता, बल्कि नए प्रकार के रोजगार अवसर भी उत्पन्न करता है। डेटा वैज्ञानिक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इंजीनियर, मशीन लर्निंग विशेषज्ञ, साइबर सुरक्षा विश्लेषक तथा डिजिटल मार्केटिंग विशेषज्ञ जैसे उच्च–कौशल आधारित व्यवसायों की माँग तेजी से बढ़ रही है। इससे स्पष्ट होता है कि श्रम बाजार में रोजगार की प्रकृति बदल रही है जहाँ शारीरिक श्रम की अपेक्षा बौद्धिक और तकनीकी कौशल का महत्व अधिक हो गया है।

इस परिवर्तन ने "कौशल असमानता" की समस्या को जन्म दिया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली और उद्योग की बदलती आवश्यकताओं के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। यदि शैक्षणिक संस्थान समयानुकूल पाठ्यक्रम, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा नहीं देंगे, तो बड़ी संख्या में श्रमिक तकनीकी परिवर्तन के अनुरूप स्वयं को ढालने में असमर्थ रहेंगे। अतः पुनः प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन कार्यक्रमों को प्राथमिकता देना अत्यंत आवश्यक है।

भारत जैसे देश में, जहाँ जनसंख्या का बड़ा हिस्सा युवा है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आर्थिक विकास और उत्पादकता वृद्धि का एक सशक्त साधन बन सकता है। डिजिटल अवसंरचना के विस्तार, स्टार्टअप संस्कृति के विकास तथा नवाचार को प्रोत्साहन देने से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित अर्थव्यवस्था में व्यापक अवसर सृजित किए जा सकते हैं। किन्तु इसके साथ–साथ सामाजिक सुरक्षा तंत्र को सुदृढ़ करना, असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा समावेशी विकास को बढ़ावा देना भी अनिवार्य है।

यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस रोजगार संरचना को समाप्त करने के बजाय उसे पुनर्परिभाषित कर रहा है। यदि सरकार, उद्योग और शैक्षणिक संस्थान समन्वित प्रयास करें, तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक को समावेशी और सतत आर्थिक विकास का माध्यम बनाया जा सकता है। भविष्य की श्रम नीतियों में तकनीकी नवाचार और सामाजिक न्याय के मध्य संतुलन स्थापित करना ही स्थायी और न्यायपूर्ण आर्थिक व्यवस्था की कुंजी होगा।

वर्तमान परिवेश में योग

डॉ. ओम प्रकाश प्रभाकर,
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
एम. के. एस. महविद्यालय, चंदौना, दरभंगा

वैज्ञानिक दार्शनिक पद्धति के रूप में भारतीय दर्शन की योग परंपरा का बहुआयामी प्रभाव प्राचीनकाल से वर्तमान काल तक देखने को मिल रहा है। सनातन योग परंपरा विभिन्न रूपों में समय और संदर्भ के अनुरूप आज तक दर्शन या चिंतन की दुनिया के आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। वर्तमान परिवेश में योग की आवश्यकता उतना ही है जितना जीने के लिए अन्य आयाम, क्योंकि आधुनिक जीवन शैली में तनाव, प्रदूषण और असंतुलित दिनचर्या से विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार इससे उत्पन्न अवसाद और चिंता जैसी समस्याएं वैश्विक माहवारी बन गईं है, ऐसे में 'योग' प्राचीन भारतीय ज्ञान का एक अमूल्य उपहार है, जिसकी आवश्यकता आज के आधुनिक और व्यस्त एवं जटिल जीवन में पहले से कहीं अधिक है। यह सिर्फ शारीरिक व्यायाम नहीं बल्कि मानसिक भावात्मक और आध्यात्मिक कल्याण का एक संपूर्ण मार्ग है।

योग 'युज' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है जुड़ना या जोड़ना। अब सवाल उठता है कि क्या जोड़ना ? सामान्य अर्थ में आत्मा को परमात्मा से जोड़ना, गीता में "योग कर्मसु कौशलम्" अर्थात कर्म में कुशलता ही योग है। पतंजलि का 'योग सूत्र' के अनुसार "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" अर्थात चित्र वृत्ति का निरोध हीं योग है। अब प्रश्न उठता है कि चित्त क्या है? सामान्य अर्थ में चित्त बुद्धि है परंतु वाचस्पति मिश्र के अनुसार चित्त, मन् बुद्धि अहंकार का समन्वित रूप है। अब प्रश्न है वृत्तियां क्या है? इंद्रियों के द्वारा ब्रह्म विषयों के संपर्क में आने पर चित्त विषय का आकार ग्रहण कर लेता है जिसे वृत्ति कहते हैं मानव मन विभिन्न प्रकार के भावों और वृत्तियां का आश्रय है प्रकृति में सत्व, रज, और तम तीन गुण मौजूद रहते हैं। इन गुणों के अनुसार विभिन्न भाव हमारे मन में उठते रहते हैं यह भाव काम, क्रोध, लोभ,मोह, घृणा, प्रेमादि अनेक रूप धारण करते हैं। चित्त के इसी भावतरंग रूप का नाम वृत्ति है। वृत्तियां का कारण, प्रमाण ,विपर्यय, विकल्प, निंद्रा और स्मृति हैं। इन वृत्तियों के कारण पांच प्रकार की भ्रांतियां उत्पन्न होती है, अविधा, अस्मिता, राग, द्वेष, और अभिनिवेश । इन भ्रांतियां को दूर करने के लिए चित्त की वृत्तियों का निरोध आवश्यक है।

मानव इन वृत्तियों के भंवर में फंसकर इधर–उधर भटकता रहता है और उसकी आत्मा परमात्मा से पृथक हो जाता है। ऐसे में अष्टांग योग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, आत्मा से परमात्मा को जोड़ने का उत्कृष्ट मार्ग है। योग वर्तमान परिवेश की आवश्यकता हीं नहीं जरूरत है क्योंकि योग से आत्मिक विकास और समग्र कल्याण संभव है यह सिर्फ शरीर को नहीं बल्कि मन, भावना, और चेतन को भी संतुलित करता है। कहा जाए तो यह 'भीतर और बाहर दोनों का विज्ञान' है।

यम (अहिंसा, सत्य, असते, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह,) यह ब्रह्म और अभ्यंतर इंद्रियों के संयम के साथ मन को संबल बनाते हुए मानव की बुरी प्रवृत्तियां को बश में करता है।

नियम (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान,) आंतरिक इंद्रियों को शुद्ध कर हमें खुद को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ और अनुशासित रखने में सहायक है। यम और नियम के बिना योग केवल व्यायाम बनकर रह जाता, यही दोनों मानव के चरित्र निर्माण में सहायक हैं।

आसन शरीर को विशेष मुद्रा में रखना (सूर्यनमस्कार यदि) सीखाता है। सामान्यतः चौरासी आसान है, किंतु कुछ ग्रंथों में चौरासी लाख आसनों की चर्चा की गई है। वैसे देखें तो मानव की वह मुद्रा जो जीवन के लिए उपयोगी या अनुपयोगी ही क्यों नहीं है, वह सब आसान है। हम मानव जिस भी मुद्रा में हों वह आसान है।

प्राणायाम (पूरक, कुंभक, रेचक) के द्वारा मन को शांत कर नकारात्मक विचार को बाहर कर और शारीरिक स्वास्थ्य को ठीक करता है।

धारणा और ध्यान चित्त को अभीष्ट विषय पर जमा कर नियमित साधन से 'मैं और मेरा' का भावना कम कर व्यापक दृष्टिकोण विकसित करता है, और आंतरिक चेतन का अनुभव गहरा करता है।

प्राणायाम और आसन से रक्त प्रभाव बेहतर करना हृदय पर दबाव कम कर ब्लड प्रेशर संतुलित करना और स्वसन क्षमता बढ़ाना, अस्थमा या सांस की समस्या वाले रोगों में लाभ पहुंचाना, रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ने, शारीर की बीमारियों से लड़ने की क्षमता विकसित करना आदि । देखा जाए तो योग से हमारे जीवन में कई महत्वपूर्ण बदलाव आते हैं जो संक्षिप्त में निम्न है–

शारीरिक स्तर :– आसान और प्राणायाम से शरीर लचीला मजबूत और रोग प्रतिरोधक बनता है।

मानसिक स्तर :–ध्यान और प्राण नियंत्रण से तनाव चिंता और अवसाद कम होते हैं।

भावनात्मक स्तर :– योग भावनाओं को संतुलित कर सहनशीलता प्रेम और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है।

आध्यात्मिक स्तर :– आत्म जागरूकता और परम चेतना से जुड़ाव जीवन में शांति और आनंदमय लाता है ।

इस प्रकार 'योग' प्राचीन भारतीय अभ्यास, शरीर, मन और आत्मा को सामंजस्य स्थापित करने के साथ यह केवल शारीरिक व्यायाम से कहीं अधिक, एक जीवन शैली है जो आज के चुनौती पूर्ण समय में हमारी जरूरत बन गई है जो हमे शारीरिक, मानसिक और भावात्मक रूप से मजबूत बनाता है। यह हमें अंदर से बाहर की ओर बदलता है जिससे हम जीवन की चुनौतियों का अधिक शांति और स्थितता के साथ सामना कर सकते हैं। सूर्यनमस्कार, अनुलोम–विलोम, प्राणायाम आदि वर्तमान परिवेश की अपरिहार्य आवश्यकता है। अपनी दिन–चर्चाओं में योग को शामिल करके हम सब केवल एक स्वस्थ जीवन हीं नहीं बल्कि एक सार्थक और आनंदमय जीवन जी सकते हैं। इसलिए सुबह हो या शाम रोज कीजिए योग ।

"कितना अच्छा आलय है"

डॉ शशि भूषण शशि
सहायक प्राध्यापक, जन्तु विज्ञान विभाग
एम. के. एस. महविद्यालय, चंदौना दरभंगा

अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ए,ए
"आ" से बनता आलय है
पुस्तक रहते हैं लय में
लय सजते अपने क्रम में
इन दोनों की संधि से
बनता पुस्तकालय है
कितना सुंदर आलय है।
अंग्रेजी, हिंदी, उड़िया
लेखक हैं बढ़िया बढ़िया
महापुरुषों की गाथा हो
या ईश्वर, भाग्यविधाता हो
वेद पुराणों से लेकर
वैज्ञानिक तथ्यों का जरिया
काल विलय का मालय है
कितना अच्छा आलय है।
औषध–ज्ञान की पांडुलिपि
नहीं रह पाती छिपी–छिपी
सामाजिक समरसता की
माला रहती है गूंथी–गूंथी
पढ़ने और पढ़ाने का
चरित्र निर्माण कराने का
नव पीढ़ी उत्साह बढ़ाने का
विकास का अलख जगाने का
लोकप्रिय, सुलभ भावालय है
कितना अच्छा आलय है
कितना सुंदर आलय है।

नई शिक्षा नीति 2020 और उच्च शिक्षा में कौशल विकास एवं रोजगारपरकता

डॉ० मो० तारिकुर रहमान
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग
एम. के. एस. महविद्यालय, चंदौना, दरभंगा

भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, समावेशी और रोजगारोन्मुख बनाने के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति 2020 एक व्यापक एवं परिवर्तनकारी दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत की गई है। इस नीति का एक प्रमुख लक्ष्य विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रखकर उन्हें व्यावहारिक कौशल, नवाचार क्षमता और रोजगारोन्मुख दक्षताओं से सुसज्जित करना है।

नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत उच्च शिक्षा में बहुविषयक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया गया है, जिससे छात्र अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार विभिन्न विषयों का चयन कर सकें। साथ ही, नीति में व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में लाने पर विशेष बल दिया गया है। स्नातक स्तर पर इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप तथा उद्योग शिक्षा सहयोग को अनिवार्य बनाने की दिशा में पहल की गई है, जिससे विद्यार्थी अध्ययन के दौरान ही व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर सकें।

रोजगारपरकता को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रमों में कौशल आधारित मॉड्यूल, डिजिटल साक्षरता, उद्यमिता तथा संचार कौशल को शामिल करने पर बल दिया गया है। यह पहल विशेष रूप से कला एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है, जहाँ पारंपरिक पाठ्यक्रमों को आधुनिक रोजगार बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप अद्यतन करने की आवश्यकता रही है। नीति में उद्योगों के साथ साझेदारी, स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा तथा स्थानीय स्तर पर कौशल विकास केंद्रों की स्थापना का भी उल्लेख किया गया है।

ग्रामीण एवं अर्ध–शहरी महाविद्यालयों में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव तथा उद्योगों से सीमित संपर्क कौशल विकास कार्यक्रमों को प्रभावित कर सकता है। इसके अतिरिक्त, वर्तमान शिक्षा प्रणाली और श्रम बाजार की आवश्यकताओं के बीच समन्वय स्थापित करना भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। यदि पाठ्यक्रमों को समय–समय पर अद्यतन नहीं किया गया, तो कौशल असमानता की समस्या बनी रह सकती है।

भारत जैसे युवा–प्रधान देश में, जहाँ बड़ी संख्या में विद्यार्थी प्रतिवर्ष उच्च शिक्षा में प्रवेश करते हैं, कौशल विकास और रोजगारपरकता पर केंद्रित नीति आर्थिक विकास को गति दे सकती है। यदि विश्वविद्यालय और महाविद्यालय उद्योगों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा स्थानीय समुदायों के साथ समन्वित प्रयास करें, तो नई शिक्षा नीति 2020 न केवल उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाएगी, बल्कि युवाओं को आत्मनिर्भर और प्रतिस्पर्धी बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा को ज्ञान–आधारित से कौशल–आधारित प्रणाली की ओर रूपांतरित करने का एक सशक्त प्रयास है। इसके सफल कार्यान्वयन से रोजगार सृजन, उद्यमिता विकास और सतत आर्थिक प्रगति के नए द्वार खुल सकते हैं।

सूर्य : ऊर्जा का विशाल स्रोत

डॉ. ज्योतीन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक, भौतिकी विभाग
एम.के.एस.महाविद्यालय, चंदौना

"सूर्य केवल प्रकाश का स्रोत नहीं, बल्कि ब्रह्माण्ड की उन अद्‌भुत प्रक्रियाओं का जीवंत उदाहरण है, जिनसे ऊर्जा, पदार्थ और जीवन का निरंतर प्रवाह संचालित होता है।"

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास प्रकृति की शक्तियों को समझने और उनका विवेकपूर्ण उपयोग करने का इतिहास है। इन प्राकृतिक शक्तियों में सूर्य का स्थान सर्वोपरि है। पृथ्वी पर उपलब्ध लगभग प्रत्येक ऊर्जा स्रोत प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सूर्य की देन है। जीवन की उत्पत्ति से लेकर आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तक, सूर्य की भूमिका सर्वव्यापी और अनिवार्य रही है। यही कारण है कि वैदिक साहित्य में सूर्य को "सविता" अर्थात् सृजनकर्ता तथा आधुनिक विज्ञान में ऊर्जा के अक्षय भंडार के रूप में स्वीकार किया गया है।

खगोलभौतिकी के अनुसार सूर्य एक मध्यम आकार का तारा है, जिसका निर्माण लगभग 4.6 अरब वर्ष पूर्व हुआ। इसका द्रव्यमान सम्पूर्ण सौरमंडल के कुल द्रव्यमान का लगभग 99.86 प्रतिशत है। सूर्य के केंद्र में तापमान लगभग 1.5 करोड़ केल्विन तथा दाब अत्यधिक होने के कारण नाभिकीय संलयन की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। इस प्रक्रिया में चार हाइड्रोजन नाभिक मिलकर एक हीलियम नाभिक का निर्माण करते हैं तथा द्रव्यमान का एक सूक्ष्म भाग आइंस्टीन के प्रसिद्ध समीकरण $E = mc^2$ के अनुसार ऊर्जा में परिवर्तित हो जाता है। प्रति सेकंड सूर्य लगभग 60 करोड़ टन हाइड्रोजन को हीलियम में परिवर्तित करते हुए लगभग 3.8×10^{26} वाट ऊर्जा उत्सर्जित करता है। यही ऊर्जा विद्युतचुम्बकीय विकिरण के रूप में लगभग 8 मिनट 20 सेकंड की यात्रा के बाद पृथ्वी तक पहुँचती है।

पृथ्वी पर जीवन की समस्त जैविक एवं भौतिक प्रक्रियाएँ सूर्य से प्राप्त ऊर्जा पर निर्भर करती हैं। प्रकाश–संश्लेषण के माध्यम से पौधे सौर ऊर्जा को रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित करते हैं, जिससे संपूर्ण खाद्य–श्रृंखला संचालित होती है। जलचक्र, पवनों का निर्माण, महासागरीय धाराएँ, मौसम तथा जलवायु का संतुलन भी सौर विकिरण द्वारा नियंत्रित होता है। वस्तुतः कोयला, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधन भी करोड़ों वर्ष पूर्व संचित सौर ऊर्जा के ही रूप हैं।

इक्कीसवीं शताब्दी में ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण विश्व समुदाय के समक्ष सबसे बड़ी चुनौतियाँ हैं। जीवाश्म ईंधनों के अत्यधिक उपयोग से कार्बन डाइऑक्साइड एवं अन्य ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा बढ़ रही है, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक तापवृद्धि और जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। इन परिस्थितियों में सौर ऊर्जा एक स्वच्छ, अक्षय और सतत ऊर्जा स्रोत के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। फोटोवोल्टाइक प्रभाव के माध्यम से सौर कोशिकाएँ सूर्य के प्रकाश को सीधे विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित करती हैं। आज उच्च दक्षता वाले सिलिकॉन तथा बहु–जंक्शन सौर सेल इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति का प्रतीक हैं।

भारत, अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण, विश्व के उन देशों में है जहाँ सौर ऊर्जा की अपार संभावनाएँ उपलब्ध हैं। वर्ष के अधिकांश दिनों में पर्याप्त सौर विकिरण प्राप्त होने के कारण बड़े पैमाने पर सौर विद्युत उत्पादन संभव है। राष्ट्रीय स्तर पर सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने हेतु अनेक महत्त्वपूर्ण पहल की गई हैं, जिनके परिणामस्वरूप रूफटॉप सोलर, सौर कृषि पंप तथा विशाल सौर ऊर्जा पार्क ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में नई संभावनाएँ खोल रहे हैं। भौतिकी के विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए यह क्षेत्र नवीन पदार्थों, ऊर्जा रूपांतरण दक्षता, ऊर्जा भंडारण तथा स्मार्ट ग्रिड जैसी उन्नत तकनीकों पर अनुसंधान के व्यापक अवसर प्रदान करता है।

सूर्य केवल ऊर्जा का स्रोत नहीं, बल्कि वैज्ञानिक जिज्ञासा का भी केंद्र है। इसका अध्ययन हमें नाभिकीय भौतिकी, प्लाज़्मा भौतिकी, ऊष्मागतिकी, स्पेक्ट्रोस्कोपी तथा अंतरिक्ष विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों की गहन समझ प्रदान करता है। यही ज्ञान भविष्य की स्वच्छ ऊर्जा प्रणालियों, अंतरिक्ष अभियानों तथा सतत विकास की आधारशिला बनेगा।

अंततः यह कहा जा सकता है कि सूर्य प्रकृति की वह विराट प्रयोगशाला है, जहाँ प्रतिक्षण ऊर्जा सृजन का अद्‌भुत विज्ञान घटित हो रहा है। यदि मानवता इस असीम ऊर्जा का वैज्ञानिक, विवेकपूर्ण और सतत उपयोग करना सीख जाए, तो ऊर्जा संकट, पर्यावरण प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन जैसी अनेक वैश्विक चुनौतियों का प्रभावी समाधान संभव है। विज्ञान का भविष्य न केवल सूर्य को समझने में, बल्कि उसकी ऊर्जा का अधिकतम और कुशल उपयोग करने में भी निहित है। वास्तव में, सूर्य की अनंत ऊर्जा ही मानव सभ्यता के उज्ज्वल, आत्मनिर्भर और सतत भविष्य की सबसे सशक्त आधारशिला है।

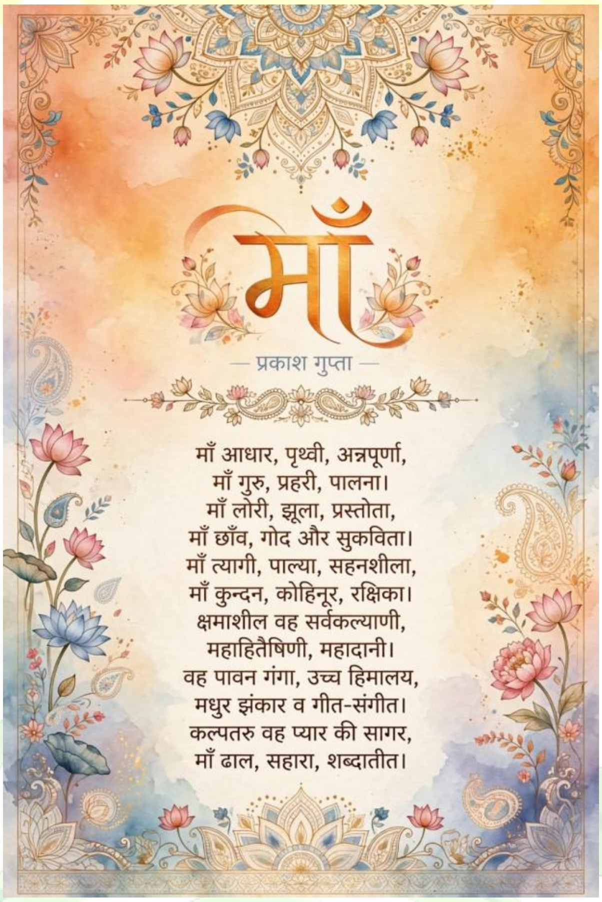

पल्लव प्रकाश

विकसित भारत 2047 : लोकतंत्र, सुशासन और युवाओं की भूमिका

डॉ. आफताब आलम
सहायक प्राध्यापक, ऊर्दू विभाग
एम. के.एस. कॉलेज, चंदौना

भारत वर्ष 2047 में अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण करेगा। यह अवसर केवल ऐतिहासिक उत्सव का नहीं, बल्कि एक ऐसे विकसित, समृद्ध, समावेशी और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का संकल्प भी है, जहाँ आर्थिक प्रगति के साथ सामाजिक न्याय, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, संवैधानिक मूल्यों और सुशासन का समन्वय हो। "विकसित भारत 2047" की परिकल्पना तभी साकार होगी जब लोकतंत्र सशक्त होगा, शासन व्यवस्था पारदर्शी एवं उत्तरदायी होगी और युवा राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँगे।

लोकतंत्र : भारत की सबसे बड़ी शक्ति

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है। यहाँ संविधान प्रत्येक नागरिक को समानता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व का अधिकार प्रदान करता है। लोकतंत्र केवल चुनाव तक सीमित नहीं है, बल्कि नागरिकों की सतत भागीदारी, उत्तरदायी शासन, विधि का शासन तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर आधारित एक जीवन–पद्धति है। एक मजबूत लोकतंत्र ही विकास को स्थायित्व प्रदान करता है और समाज में विश्वास तथा सहभागिता का वातावरण निर्मित करता है।

सुशासन की आवश्यकता :

सुशासन का अर्थ ऐसी शासन व्यवस्था से है जो पारदर्शी, जवाबदेह, संवेदनशील, प्रभावी तथा भ्रष्टाचार–मुक्त हो। आज डिजिटल प्रौद्योगिकी, ई–गवर्नेंस, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, ऑनलाइन सार्वजनिक सेवाएँ तथा सूचना का अधिकार जैसी व्यवस्थाओं ने प्रशासन को अधिक उत्तरदायी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नीति निर्माण और उसके प्रभावी क्रियान्वयन में सुशासन की केंद्रीय भूमिका है।

विकसित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका :

भारत विश्व के सबसे युवा देशों में से एक है। युवाओं की ऊर्जा, नवाचार, वैज्ञानिक सोच और उद्यमशीलता विकसित भारत की सबसे बड़ी पूँजी है। आज का युवा केवल रोजगार का इच्छुक नहीं, बल्कि रोजगार सृजन, नवाचार, स्टार्टअप, अनुसंधान, डिजिटल प्रौद्योगिकी, सामाजिक सेवा और नेतृत्व के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की क्षमता रखता है।

युवाओं को संविधान के मूल्यों का सम्मान करते हुए लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी करनी चाहिए। मतदान, सामाजिक जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल साक्षरता, महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता, सामाजिक समरसता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना उनके प्रमुख दायित्व हैं।

चुनौतियाँ :

विकसित भारत की यात्रा अनेक चुनौतियों से भी जुड़ी है। बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, डिजिटल विभाजन, जलवायु परिवर्तन, दुष्प्रचार, साइबर सुरक्षा और लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति घटता विश्वास जैसी समस्याओं का समाधान सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। सरकार, नागरिक समाज, शैक्षणिक संस्थानों और युवाओं के बीच समन्वय इस दिशा में अत्यंत आवश्यक है।

महिला सशक्तिकरण और भारतीय राजनीति : समानता से नेतृत्व तक की यात्रा

डॉ. मिथिलेश कुमार
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग
एम. के.एस. कॉलेज, चंदौना

महिला सशक्तिकरण किसी भी लोकतांत्रिक समाज के समग्र विकास का महत्वपूर्ण आधार है। भारतीय संविधान ने महिलाओं को समानता, स्वतंत्रता और गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार प्रदान किया है, किंतु सामाजिक एवं राजनीतिक स्तर पर समान भागीदारी सुनिश्चित करना आज भी एक चुनौती बना हुआ है। वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण केवल अधिकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि नेतृत्व, निर्णय–निर्माण और राष्ट्र निर्माण में उनकी सक्रिय भूमिका से भी जुड़ा है। यह लेख भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका, संवैधानिक प्रावधानों, उपलब्धियों, चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

प्रमुख शब्दः महिला सशक्तिकरण, भारतीय राजनीति, लोकतंत्र, संविधान, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, सुशासन।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जहाँ लोकतंत्र की सफलता नागरिकों की समान एवं सक्रिय भागीदारी पर निर्भर करती है। महिलाओं की जनसंख्या देश की कुल आबादी का लगभग आधा भाग है; अतः उनके बिना लोकतांत्रिक विकास की कल्पना अधूरी है। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आधुनिक भारत तक महिलाओं ने सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, प्रशासन और न्यायपालिका सहित अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी केवल प्रतीकात्मक न रहकर नीति–निर्माण और शासन के प्रत्येक स्तर पर प्रभावी हो।

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा :

महिला सशक्तिकरण का आशय महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक तथा कानूनी रूप से सक्षम बनाना है ताकि वे स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सकें और समाज के विकास में समान भागीदारी निभा सकें। इसका उद्देश्य केवल अधिकार प्रदान करना नहीं, बल्कि अवसर, संसाधन और नेतृत्व क्षमता का विकास भी है।

भारतीय संविधान और महिलाओं के अधिकार

भारतीय संविधान महिलाओं के अधिकारों की सुदृढ़ सुरक्षा करता है। संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 16 समानता तथा समान अवसर की गारंटी देते हैं। अनुच्छेद 39 महिलाओं और पुरुषों के लिए समान वेतन तथा समान अवसर की बात करता है, जबकि अनुच्छेद 42 कार्यस्थलों पर मानवीय परिस्थितियों और मातृत्व संरक्षण का प्रावधान करता है। इन संवैधानिक प्रावधानों ने महिलाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक भागीदारी को मजबूत आधार प्रदान किया है।

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका :

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका अत्यंत प्रेरणादायक रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी महिलाओं ने संसद, विधानसभाओं, पंचायती राज संस्थाओं और स्थानीय निकायों में प्रभावी

नेतृत्व प्रस्तुत किया। 73वें और 74वें संविधान संशोधनों के माध्यम से स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण ने लाखों महिलाओं को नेतृत्व का अवसर प्रदान किया। इससे ग्रामीण लोकतंत्र अधिक सहभागी और समावेशी बना।

आज महिलाएँ प्रशासन, कूटनीति, न्यायपालिका, शिक्षा और सार्वजनिक नीति जैसे क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। उनकी बढ़ती भागीदारी लोकतंत्र की गुणवत्ता और सुशासन को सुदृढ़ करती है।

महिला नेतृत्व का महत्व :

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी से शासन अधिक संवेदनशील और उत्तरदायी बनता है। महिला प्रतिनिधि शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता, महिला सुरक्षा, बाल विकास और सामाजिक न्याय जैसे विषयों को प्राथमिकता देती हैं। इससे समावेशी विकास को बढ़ावा मिलता है और लोकतांत्रिक संस्थाओं में जनता का विश्वास भी मजबूत होता है।

प्रमुख चुनौतियाँ :

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के मार्ग में अभी भी अनेक बाधाएँ हैं

सामाजिक एवं लैंगिक रूढ़ियाँ।

शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता में असमानता।

आर्थिक संसाधनों की कमी।

चुनावी राजनीति में बढ़ता व्यय।

राजनीतिक हिंसा एवं ऑनलाइन उत्पीड़न।

राजनीतिक दलों में सीमित अवसर।

इन चुनौतियों का समाधान शिक्षा, जागरूकता, आर्थिक आत्मनिर्भरता और संस्थागत सुधारों के माध्यम से किया जा सकता है।

भविष्य की दिशा :

विकसित भारत के निर्माण में महिलाओं की भागीदारी को और सशक्त बनाने के लिए आवश्यक है कि -

महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और नेतृत्व प्रशिक्षण मिले।

राजनीतिक दल अधिक संख्या में महिलाओं को उम्मीदवार बनाएँ।

सुरक्षित एवं सम्मानजनक राजनीतिक वातावरण सुनिश्चित किया जाए।

आर्थिक आत्मनिर्भरता और कौशल विकास को बढ़ावा दिया जाए।

लोकतांत्रिक संस्थाओं में महिलाओं की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

आखिरी दीपक: एक प्रेरक हिन्दी साहित्यिक कहानी

डॉ. बबिता कुमारी
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एम. के. एस. कॉलेज, त्रिमुहान–चंदौना

साँझ ढल चुकी थी। पश्चिम दिशा में सूर्य की अंतिम लालिमा धीरे–धीरे अँधेरे की चादर में समा रही थी। गाँव के किनारे स्थित एक छोटी–सी झोपड़ी में मिट्टी का दीपक टिमटिमा रहा था। उसी मद्धिम प्रकाश में बैठा अरुण अपनी पुरानी पुस्तकों के पन्ने पलट रहा था। उसके चेहरे पर थकान थी, पर आँखों में भविष्य का उजाला अब भी जीवित था।

अरुण का जीवन संघर्षों की लंबी यात्रा था। पिता एक साधारण किसान थे और माँ घर–परिवार की जिम्मेदारियों में दिन–रात लगी रहती थीं। खेत की कम होती उपज और बढ़ते खर्चों ने परिवार को अभावों के ऐसे चौराहे पर ला खड़ा किया था, जहाँ सपने अक्सर परिस्थितियों के सामने दम तोड़ देते हैं।

एक दिन पिता ने धीमे स्वर में कहा, "बेटा, अब पढ़ाई छोड़ दो। घर की जिम्मेदारियाँ तुम्हें बुला रही हैं।"

अरुण ने पिता की ओर देखा। उसकी आँखें नम थीं, पर स्वर दृढ़ था। "बाबूजी, यदि आज मैं हार गया, तो गरीबी केवल हमारी नहीं, आने वाली पीढ़ियों की भी नियति बन जाएगी।"

पिता मौन हो गए। उस मौन में चिंता भी थी और बेटे के साहस पर विश्वास भी।

दिन बीतते गए। अरुण सुबह खेत में काम करता, दोपहर में कॉलेज जाता और रात को उसी छोटे–से दीपक की रोशनी में पढ़ाई करता। कई बार तेज़ हवा का झोंका दीपक बुझा देता, लेकिन हर बार वह उसे फिर जला देता। उसे लगता, जैसे दीपक उससे कह रहा हो "अँधेरा चाहे जितना गहरा हो, एक छोटी–सी लौ भी उसे चुनौती दे सकती है।"

वर्षों की तपस्या रंग लाई। प्रतियोगी परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। अरुण सफल हो चुका था। पूरे गाँव में खुशी की लहर दौड़ गई। लोग उसे बधाई देने लगे। वही लोग, जो कभी उसके सपनों को व्यर्थ बताते थे, आज उसकी सफलता की चर्चा कर रहे थे।

सम्मान समारोह में जब अरुण से उसकी सफलता का रहस्य पूछा गया, तो उसने मंच से कहा-

"मेरी सफलता किसी चमत्कार की देन नहीं है। यह उस दीपक की देन है, जो हर बार बुझकर भी जलना जानता था। जीवन भी उसी दीपक की तरह है। परिस्थितियाँ हमें गिरा सकती हैं, लेकिन यदि हमारे भीतर विश्वास की लौ जीवित है, तो कोई अँधेरा स्थायी नहीं होता।"

बाल्य शिक्षा और उसकी देखभाल

डॉ. उमाशंकर कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
एम के एस महाविद्यालय त्रिमुहान चन्दौना।

बाल्य शिक्षा और देखभाल एक महत्वपूर्ण विषय है,जो बच्चों के विकास और भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें थोड़ी सी भी चूक बच्चों के भविष्य को अंधकार में धकेल सकता है। आइए हमें पहले यह समझना होगा कि बाल्य शिक्षा क्या है और यह बच्चों के प्रारम्भिक विकास में कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

'बाल्य शिक्षा क्या है :–

बाल्य शिक्षा बच्चों को प्रारम्भिक अवस्था में दी जाने वाली शिक्षा है।जो आमतौर पर 0 से 6 वर्ष की आयु के बीच होती है। इस अवस्था में, बच्चों का मस्तिष्क सबसे अधिक संवेदनशील और ग्रहणशील होता है , साथ ही वह अपने आसपास के वातावरण से बहुत कुछ सीखता है।

'बाल्य शिक्षा के उद्देश्यः–

1, बच्चे के विकास को बढ़ावा देनाः– बाल शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देना है।

2, सीखने की क्षमता विकसित करनाः– बाल्य शिक्षा का उद्देश्य बच्चों में सीखने की क्षमता को विकसित करना है, जिससे वे आगे की शिक्षा में बेहतर प्रदर्शन कर सकें।

3, सामाजिक कौशल विकसित करना :– बाल्य शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को सामाजिक कौशल विकसित करना है, जैसे – किसी से बातचीत करना, दूसरे को सहयोग करना, दूसरे को आदर करने की कौशल विकास करना आदि।

'बाल्य देखभालः–

बाल्य देखभाल बच्चों की सुरक्षा के लिए की जाने वाली गतिविधियां हैं, इसमें बच्चों को पौष्टिक आहार देना, मौसम अनुकूल कपड़े पहनाना, नहलाना और उसकी अन्य जरुरतों को उसके हाव–भाव देखकर पूरा करना शामिल है। इसमें परिवार के सदस्यों की भी अहम भूमिका होनी चाहिए।

'निष्कर्षः– अन्त में हम यह कह सकते हैं कि बाल्य शिक्षा और उसकी देखभाल बच्चों के अभिभावक अर्थात माता पिता तथा परिवार के सभी सदस्यों के लिए एक अहम भूमिका है, जिससे बच्चों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में योगदान देता है।

आत्मविश्वास की उड़ान: एक प्रेरक कहानी

डॉ. प्रदीप कुमार
सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान विभाग
एम. के. एस. कॉलेज, त्रिमुहान–चंदौना

कॉलेज के विशाल सभागार में वार्षिक वाद–विवाद प्रतियोगिता आरंभ होने वाली थी। मंच सजा हुआ था और विद्यार्थियों में उत्साह का वातावरण था। प्रतिभागियों की सूची में एक नाम ऐसा भी था, जिसे देखकर सभी हैरान थे अखिल। वही अखिल, जो कक्षा में कभी खुलकर नहीं बोलता था, जिसकी आवाज़ उपस्थिति दर्ज कराते समय भी धीमी पड़ जाती थी और जो भीड़ से हमेशा दूर रहने का प्रयास करता था।

अखिल की सबसे बड़ी कमजोरी ज्ञान की कमी नहीं, बल्कि आत्मविश्वास की कमी थी। उसे हर समय लगता कि लोग उसकी गलतियों पर हँसेंगे। यही भय उसके व्यक्तित्व की उड़ान को रोक रहा था।

एक दिन मनोविज्ञान विभाग की कक्षा में प्राध्यापक ने श्यामपट पर केवल एक पंक्ति लिखी-

"मनुष्य की सबसे बड़ी सीमा उसकी परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि उसके मन में बैठा भय है।"

यह वाक्य उसके हृदय में उतर गया। उसने निश्चय किया कि वह अब अपनी पहचान अपने डर से नहीं, बल्कि अपने प्रयासों से बनाएगा।

उसने प्रतिदिन स्वयं से एक वादा किया। हर दिन एक नया कदम। कभी दर्पण के सामने बोलना, कभी पुस्तकालय में ऊँचे स्वर में पढ़ना, कभी मित्रों के बीच अपने विचार रखना। शुरुआत कठिन थी। कई बार शब्द अटक गए, कई बार लोग मुस्कुरा भी दिए, पर इस बार उसने हार नहीं मानी। उसे समझ आ गया था कि उपहास कुछ क्षणों का होता है, लेकिन आत्मविश्वास जीवनभर साथ रहता है।

समय बीतता गया। उसका आत्मविश्वास धीरे–धीरे बढ़ने लगा। अब वह प्रश्न पूछने लगा, चर्चाओं में भाग लेने लगा और अपनी झिझक को चुनौती देने लगा।

फिर वही दिन आया। वाद–विवाद प्रतियोगिता का।

जब उसका नाम पुकारा गया, तो कुछ क्षणों के लिए पूरा सभागार शांत हो गया। अखिल ने मंच पर पहुँचकर सामने बैठे सैकड़ों विद्यार्थियों को देखा। पहले की तरह उसके कदम नहीं डगमगाए। उसने मुस्कुराकर बोलना शुरू किया। उसके शब्दों में आत्मविश्वास था, विचारों में स्पष्टता थी और आवाज़ में दृढ़ता थी। भाषण समाप्त होते ही सभागार देर तक तालियों की गूँज से भर गया।

परिणाम घोषित हुआ। अखिल प्रथम स्थान पर था।

पुरस्कार ग्रहण करते समय उसने कहा -

"आज मैंने प्रतियोगिता नहीं जीती, मैंने अपने मन में बैठे भय को हराया है। जिस दिन हम स्वयं पर विश्वास करना सीख लेते हैं, उसी दिन सफलता हमारी ओर पहला कदम बढ़ा देती है।"

उसकी बातें सुनकर अनेक विद्यार्थियों की आँखों में नई उम्मीद जाग उठी। उन्हें एहसास हुआ कि जीवन की सबसे बड़ी जीत दूसरों पर नहीं, स्वयं पर विजय प्राप्त करना है। मनोविज्ञान भी यही सिखाता है कि सकारात्मक सोच, आत्मस्वीकृति, निरंतर अभ्यास और दृढ़ संकल्प से कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा सकता है।

उस दिन अखिल की सफलता केवल एक छात्र की उपलब्धि नहीं थी, वह उन सभी युवाओं के लिए प्रेरणा बन गई, जो अपनी क्षमताओं पर संदेह करते हैं। सच तो यह है कि उड़ान पंखों से नहीं, आत्मविश्वास से भरी जाती है।

प्रेरक प्रसंग

राजा का अनोखा पुरस्कार

एक राज्य में भीषण सूखा पड़ा। नदियाँ और तालाब सूखने लगे, लोग पानी के लिए परेशान रहने लगे। राजा ने घोषणा की कि जो व्यक्ति राज्य में जल संकट का सबसे अच्छा समाधान बताएगा, उसे स्वर्ण मुद्राओं से सम्मानित किया जाएगा।

अनेक विद्वानों ने बड़े–बड़े बाँध बनाने, दूर–दराज़ की नदियों का पानी लाने और महँगी योजनाओं के सुझाव दिए। तभी एक साधारण किसान दरबार में पहुँचा। उसने कहा, "महाराज, यदि राज्य का प्रत्येक नागरिक प्रतिदिन केवल एक घड़ा वर्षा जल बचाने और एक पौधा लगाने का संकल्प ले ले, तो कुछ वर्षों में हमारे तालाब भर जाएंगे, भूजल स्तर बढ़ जाएगा और सूखे का संकट स्वयं कम होने लगेगा।"

राजा ने किसान की बात को पूरे राज्य में लागू कराया। लोगों ने घरों और खेतों में वर्षा जल संचयन शुरू किया, पुराने तालाबों की सफाई की और जल स्रोतों का संरक्षण किया। कुछ वर्षों बाद वही राज्य जल–संपन्न और हरित प्रदेश के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

राजा ने किसान को सम्मानित करते हुए कहा, "सबसे बड़ा समाधान वह नहीं होता जो सबसे महँगा हो, बल्कि वह होता है जिसमें पूरे समाज की भागीदारी हो।"

प्रेरणाः "जल का संरक्षण किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे समाज का साझा उत्तरदायित्व है।"

फूड टेक्नोलॉजी : भविष्य का हाई–प्रोफाइल करियर

सुधांशु रंजन झा
सहायक प्राध्यापक, पर्यावरण विज्ञान विभाग
एम. के. एस. कॉलेज, त्रिमुहान–चंदौना, दरभंगा

"स्वस्थ जीवन का आधार सुरक्षित भोजन है, और सुरक्षित भोजन का आधार है - वैज्ञानिक फूड टेक्नोलॉजी।"

मानव सभ्यता के विकास के साथ भोजन की आवश्यकता केवल पेट भरने तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसका संबंध स्वास्थ्य, पोषण, गुणवत्ता और जीवन–स्तर से भी जुड़ गया है। वैश्वीकरण, शहरीकरण तथा बदलती जीवनशैली के कारण आज खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता, सुरक्षा एवं दीर्घकालिक संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन चुके हैं। ऐसे समय में फूड टेक्नोलॉजी एक ऐसे वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र के रूप में उभरी है, जो आधुनिक विज्ञान, अभियांत्रिकी तथा स्वास्थ्य विज्ञान के समन्वय से सुरक्षित, पौष्टिक एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य पदार्थों का विकास सुनिश्चित करती है।

भारत विश्व के सबसे बड़े कृषि उत्पादक देशों में से एक है। कृषि उत्पादन को मूल्यवर्धित उत्पादों में परिवर्तित करने, खाद्य अपव्यय को कम करने तथा वैश्विक बाजार तक पहुँचाने में फूड टेक्नोलॉजी की महत्वपूर्ण भूमिका है। यही कारण है कि आज यह क्षेत्र केवल रोजगार का माध्यम नहीं, बल्कि विज्ञान, उद्योग और नवाचार का सशक्त मंच बन चुका है।

फूड टेक्नोलॉजी क्या है ?

फूड टेक्नोलॉजी वह विज्ञान है जिसके अंतर्गत खाद्य पदार्थों के उत्पादन, प्रसंस्करण, संरक्षण, गुणवत्ता परीक्षण, पैकेजिंग, भंडारण तथा वितरण का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। इसका उद्देश्य उपभोक्ताओं तक सुरक्षित, पौष्टिक, स्वादिष्ट तथा उच्च गुणवत्ता वाला भोजन पहुँचाना है।

इस विषय में निम्नलिखित शाखाओं का समन्वय होता है-

खाद्य रसायन (Food Chemistry)
खाद्य सूक्ष्मजीव विज्ञान (Food Microbiology)
खाद्य अभियांत्रिकी (Food Engineering)
पोषण विज्ञान (Nutrition)
गुणवत्ता नियंत्रण एवं आश्वासन (Quality Control & Quality Assurance)
खाद्य सुरक्षा एवं मानक (Food Safety Standards)
पैकेजिंग एवं संरक्षण तकनीक

विज्ञान और तकनीक का समन्वय

फूड टेक्नोलॉजी आधुनिक विज्ञान की अनेक शाखाओं का अनुप्रयोग है। भौतिकी के सिद्धांतों का उपयोग ताप संचरण, शीतलन, निर्जलीकरण, विकिरण संरक्षण तथा आधुनिक पैकेजिंग तकनीकों में किया जाता है। रसायन विज्ञान खाद्य पदार्थों की संरचना एवं गुणवत्ता का विश्लेषण करता है, जबकि जीवविज्ञान एवं सूक्ष्मजीव विज्ञान भोजन की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स तथा डेटा विश्लेषण जैसी आधुनिक तकनीकें भी आज खाद्य उद्योग का अभिन्न अंग बन चुकी हैं।

भारत में संभावनाएँ

भारत का खाद्य प्रसंस्करण उद्योग विश्व के सबसे तेजी से विकसित होते उद्योगों में शामिल है। डेयरी, फल एवं सब्ज़ी प्रसंस्करण, मसाले, समुद्री उत्पाद, जैविक खाद्य, रेडी–टू–ईट उत्पाद तथा न्यूट्रास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों में निरंतर विस्तार हो रहा है। सरकार द्वारा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को प्रोत्साहन, कोल्ड–चेन विकास तथा स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा दिए जाने से इस क्षेत्र में रोजगार एवं उद्यमिता की संभावनाएँ निरंतर बढ़ रही हैं।

रोजगार के विविध अवसर

फूड टेक्नोलॉजी में स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए अनेक क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध हैं

फूड टेक्नोलॉजिस्ट

गुणवत्ता नियंत्रण अधिकारी

खाद्य सुरक्षा अधिकारी

अनुसंधान वैज्ञानिक

उत्पाद विकास विशेषज्ञ

उत्पादन प्रबंधक

पैकेजिंग विशेषज्ञ

पोषण सलाहकार

शिक्षण एवं अनुसंधान

इसके अतिरिक्त बहुराष्ट्रीय खाद्य कंपनियों, सरकारी प्रयोगशालाओं, अनुसंधान संस्थानों, गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशालाओं तथा निर्यात उद्योगों में भी उत्कृष्ट अवसर उपलब्ध हैं।

उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान

जो विद्यार्थी अनुसंधान के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं, उनके लिए उच्च शिक्षा के अनेक अवसर उपलब्ध हैं। खाद्य सुरक्षा, कार्यात्मक खाद्य (Functional Foods), जैव सक्रिय यौगिक, स्मार्ट पैकेजिंग, वैकल्पिक प्रोटीन तथा सतत खाद्य प्रणालियों पर विश्वभर में व्यापक शोध कार्य हो रहे हैं। आवश्यक कौशल

इस क्षेत्र में सफलता के लिए निम्न गुण आवश्यक हैं

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

प्रयोगशाला कौशल

समस्या समाधान क्षमता
अनुसंधान अभिरुचि
टीमवर्क एवं नेतृत्व क्षमता
संचार कौशल
गुणवत्ता एवं अनुशासन के प्रति प्रतिबद्धता

भविष्य की दिशा

आने वाले वर्षों में फूड टेक्नोलॉजी का स्वरूप और अधिक उन्नत होने जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित गुणवत्ता परीक्षण, स्मार्ट सेंसर, फूड प्रिंटिंग, वैकल्पिक प्रोटीन, पौध–आधारित खाद्य पदार्थ, जैव–अवक्रमणीय पैकेजिंग तथा व्यक्तिगत पोषण (च्मतेवदंसप्रमक छनजतपजपवद) जैसे क्षेत्र भविष्य के प्रमुख अनुसंधान विषय होंगे।

विश्व स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा तथा सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में भी फूड टेक्नोलॉजी की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। इसलिए यह क्षेत्र केवल रोजगार नहीं, बल्कि मानवता की सेवा का भी माध्यम है। फूड टेक्नोलॉजी विज्ञान, नवाचार और मानव कल्याण का अद्भुत समन्वय है। यह ऐसा क्षेत्र है जो विद्यार्थियों को सम्मानजनक करियर, उत्कृष्ट वेतन, वैश्विक अवसर तथा समाज के प्रति सार्थक योगदान सभी प्रदान करता है। विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए यह भविष्य का एक अत्यंत उज्ज्वल, प्रतिष्ठित एवं हाई–प्रोफाइल करियर है। यदि युवा वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अनुसंधान भावना और नवाचार की सोच के साथ इस क्षेत्र में आगे बढ़ें, तो वे न केवल अपने करियर को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा सकते हैं, बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा और सतत विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

दोस्ती

Masoom Kumari
Semester: 1st Session: 2025-29,
Zoology, M.K.S. College, Chandauna, Darbhanga

दोस्ती एक ऐसा मन्सूबा (उपाय) है जिसमें हर शख्स अपना हर कुछ लुटा कर भी खुश रहता है सच्ची दोस्ती आज की नहीं बल्कि दुनिया की शुरुआत से ही चलती आ रही है। दोस्ती वफादारी (भरोसा) पे चलती है। ऐसा भरोसा कि तू मेरे लिए जान दे सकता है, पर धोखा नहीं। हम लोग भगवान श्री कृष्ण को जानते हैं उनके मित्र सुदामा और हजरत इमाम हुसैन के कहने पर अब्बास ने चिराग जलाया। इसका भी उल्लेख एक वफादार दोस्त का ही है।

कर दे मेरा नाम हर शह पे सुमार (शामिल)
तेरे पवित्रता पे हो जाऊं ऐ दोस्त मैं कुर्बान।
तेरे एक मनसूबा (इशारा) काफी है ये जान ले...
तेरे खातिर तो हाजिर है मेरी खुद की मैं, मेरी जान...
करके तर्क–ए–ताल्लुक (रिश्ता तोड़ना) चले जाएंगे लोग।
तेरे सहारा हूँ मैं तू जब चाहे लेले मेरी इम्तेहान।
मिलने को तो मिल जाएंगे तुझे हजारों यार,
मगर कहाँ होंगे हमसे सब मुनाफिक (वफादार) मेरे यार...
एक तू है एक मैं हूँ और बाकी सारा जहान।
तेरे करीब अगर एक भी कोई हो तो वो मैं ही हूँ मेरे यार।

भूख का चमत्कार

Mohammad Ismail
Semester: 1st Session: 2025-29,
Zoology, M.K.S. College, Chandauna, Darbhanga

जब हमारा जिस्म बनता है अपना ही डॉक्टर

सदियों से हम रोजा और उपवास रखते आए हैं। इसे करने से एक अजीब सा रूहानी सुकून मिलता है, एक ऐसी शांति जो किसी और चीज में नहीं। पर क्या आपने कभी सोचा है कि जिस वक्त हम इबादत में होते हैं और हमारा पेट खाली होता है, ठीक उसी वक्त हमारे जिस्म के अंदर क्या चल रहा होता है? साइंस कहती है कि खाली पेट रहना सिर्फ भूख बर्दाश्त करना नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी चाबी है जो जिस्म के अंदर एक जादुई दुनिया को बेदार (जगा) कर देती है।

अलग–अलग धर्म, एक ही विज्ञान

हमारे प्यारे मुल्क हिंदुस्तान की खूबसूरती ही यही है कि यहाँ हर धर्म में शरीर और रूह को पाक–साफ रखने का अपना खास तरीका है। चाहे वो रमजान के मुकद्दस रोजे हों, नवरात्र या एकादशी का उपवास हो, जैन धर्म की कठिन तपस्या हो, या फिर क्रिश्चियन धर्म का लेंट। और सिर्फ हमारे देश में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में आज लोग इंटरमिटेंट फास्टिंग के नाम से इसे अपना रहे हैं।

तरीके अलग–अलग हो सकते हैं– कहीं पानी पिया जाता है, कहीं बिल्कुल नहीं, कहीं सिर्फ फल खाए जाते हैं। लेकिन विज्ञान की नजर में सबका निचोड़ एक ही है। जब पेट खाली होता है, तो शरीर धर्म या सरहद नहीं देखता, वह बस अपनी रिपेयरिंग शुरू कर देता है। यानी रास्ता कोई भी हो, मंजिल एक ही है– एक सेहतमंद और निरोगी शरीर।

अंदरूनी सफाई का चमत्कार (ऑटोफैगी)

हमारे जिस्म के हर हिस्से, यानी हर सेल में रोजाना काम का बोझ और कचरा जमा होता है। जब हम 12 से 14 घंटे तक कुछ नहीं खाते, तो जिस्म घबराता नहीं है। वह देखता है कि बाहर से खाना नहीं आ रहा, तो वह अपने ही अंदर की सफाई शुरू कर देता है।

सेल्स अपने अंदर जमा हुए कचरे, मरे हुए हिस्सों और बीमारी फैलाने वाले कीटाणुओं को खुद ही खा कर खत्म कर देते हैं। विज्ञान की जबान में इस चमत्कार को ऑटोफैगी कहते हैं। सोचिए, जिस्म खुद अपना कचरा जला कर खुद को जवान और सेहतमंद बना रहा है! कुदरत का यह निजाम इतना हैरतअंगेज है कि जब इसकी खोज हुई, तो 2016 में जापानी साइंटिस्ट डॉ. योशिनोरी ओसुमी को इसके लिए दुनिया का सबसे बड़ा इनाम –नोबेल प्राइज– दिया गया।

दिमाग की बत्ती और नई ताकत

हमें अक्सर लगता है कि खाना नहीं खाएंगे तो चक्कर आएगा, दिमाग ठीक से काम नहीं करेगा। पर कुदरत का निजाम देखिए! जब बॉडी का आम शुगर खत्म होने लगता है, तो हमारा लिवर अंदर जमी हुई जिद्दी चर्बी को पिघला कर एक नया और ताकतवर ईंधन बनाता है, जिसे कीटोन्स कहते हैं। ये कीटोन्स दिमाग के लिए एकदम प्रीमियम पेट्रोल जैसा काम करते हैं। इस दौरान दिमाग में एक खास प्रोटीन बनने लगता है, जो नई दिमागी कोशिकाएं पैदा करता है। यही वजह है कि रोजे या उपवास की हालत में अचानक सुस्ती गायब हो जाती है, फोकस दोगुना हो जाता है और एक जबरदस्त दिमागी ताजगी महसूस होती है।

कुदरत का फ्री मैकेनिक

जो रूहानी बातें हमने सदियों से सुनी हैं, आज विज्ञान उन्हीं पर अपनी मुहर लगा रहा है। कुदरत ने हमारे जिस्म में एक लाजवाब डॉक्टर और फ्री का मैकेनिक बिठा रखा है, जो सिर्फ खाली पेट होने पर अपना काम शुरू करता है। लगातार कुछ न कुछ खाते रहने से यह मैकेनिक सोता रहता है। इसलिए, खाली पेट रहना कोई सजा नहीं, बल्कि अपने जिस्म को नया बनाने का सुनहरा मौका है। पर हां, यहां एक छोटी सी और बहुत जरूरी शर्त है! इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं कि दिन भर पेट खाली रखने के बाद, इफ्तार या रात के खाने में हम दस्तरख्वान का सारा खाना ऐसे साफ कर दें कि पेट के अंदर बैठा मैकेनिक भी सिर पकड़ ले। वह भी बेचारा रोता हुआ बोलेगा भाई, इससे बढ़िया तो तू दिन में ही थोड़ा खा लेता! अब अचानक से एक साथ इतना बोझ डाल दिया, मैं अकेला क्या–क्या ठीक करूंगा?

आखिर कैसे पैदा हो रुपवती मिल्की व्हाईट कन्याएँ ?

निधि कुमारी
स्नातकोत्तर (मनोविज्ञान)
डी. डी. ई.,एल. एन. एम. यू., दरभंगा

दशेक वर्ष पूर्व शादियों की सफलता हेतु दहेज एक बाधक तत्व था, दहेज जुटाने के बाद कुँवारी कन्याओं के विवाह प्रायः हो जाया करते थे।

पर आज स्थिति ये है कि कोई कन्या यदि दूधिया गोरी, लम्बी और छरहरी नही है तो एक अदना सा दामाद भी जुटाना किसी बाप के लिए बड़ी चुनौती साबित हो रहा है।

रंग और रूप प्रकृति प्रदत्त है, जिस पर इंसान का वश नहीं है, लेकिन बेटे वाले के दरवाजे पर घिसे चप्पल पहन आए बेटी वालों को यह संकल्प सुनाया जाता है कि हम अन्य चीजों पर समझौता तो कर सकते हैं पर रंग, रूप और लम्बाई पर नहीं।

कई जातियों में गोरी कन्याएँ कम ही हैं, जिसके कारण उनकी शादियाँ तो रूकी पड़ी ही हैं, साथ–साथ एक बहुत बड़ी शादी योग्य युवाओं की फौज परियों जैसी रानी के ख्वाब में चालीस साला होने लगे हैं।

मेनका और रंभा पैदा करना अपने वश में नहीं है। मेनका की तलाश में एक पीढ़ी कुँवारे रह जाए हास्यास्पद है। उस पर बेटे के पिता का यह उद्‌गार– हम बाकी चीजों पर थोड़ा झुक सकते हैं, मिल्की व्हाईट के सवाल पर नहीं।

रूपसी पत्नी की चाहत आज दहेज दानव से भी बड़ी समस्या बन गई है।

प्राणिविज्ञान – जीवन की कहानी

Sakrin Fatma
Semester-2nd, Zoology,24-28
M.K.S. College, Chandauna, Darbhanga

जंगल की धड़कन, सागर की गहराई,
हर जीव में छुपी है जीवन की सच्चाई।

चींटी की मेहनत, शेर की दहाड़,
प्रकृति ने रचा है अद्भुत संसार।

कोशिका से बनता पूरा शरीर, ऊतक, अंग, तंत्र – रचना गंभीर।

हृदय की धड़कन, साँसों का प्रवाह,
जीवित होने का यही है प्रमाण।

खून की धाराएँ पोषण पहुँचाएँ,
तंत्रिकाएँ संदेश तुरंत पहुँचाएँ।

मांसपेशियाँ करतीं गति का काम,
संतुलन रखे शरीर का धाम।

डार्विन ने समझाया विकास का राज,
परिवर्तन से आगे बढ़ता है समाज।

अनुकूलन से बचता हर प्राणी,
प्रकृति लिखती अपनी कहानी।

पर्यावरण से जुड़ा हर जीव, खाद्य शृंखला रखे संतुलन सीव।

एक कड़ी टूटी तो संकट आए,
जीवन का ताना–बाना डगमगाए।

प्राणिविज्ञान केवल नाम नहीं,
जीवन समझने का आयाम सही।

जो जीव–जगत को पढ़ना जान गया,
वह प्रकृति का सम्मान करना सीख गया।

दूध – जीवन का आधार

Sidhu Kumari
Semester-2nd , Zoology, 24-28
M.K.S. College, Chandauna, Darbhanga

सुबह–सवेरे जब घर में आता, खुशियों
की सौगात है लाता।

उजला–उजला, प्यारा–प्यारा,
सेहत का है यह सहारा।

शक्ति का यह मेल है,
हड्डियों का यह खेल है।

मम्मी पीछे दौड़ लगाती,
पी लो बेटा शोर मचाती।

कभी मलाई, कभी है झाग,
मिटा देता है सुस्ती का दाग।

चाहे पी लो ठण्डा–ठण्डा,
या फिर गरमा–गरम प्याला,
दूध है सबसे भोला–भाला।

दही, पनीर और मक्खन भारी,
दूध से बनती दुनिया सारी।

मिठाई हो या खीर की बात,
दूध निभाता सबका साथ।

पल्लव प्रकाश

भौतिकी – प्रकृति की भाषा

Amarnath Thakur
Student, Physics Department,
M.K.S. College, Chandauna, Darbhanga

गति से शुरू हुई कहानी, नियमों ने दिया आकार,
न्यूटन ने समझाया बल, द्रव्यमान, संवेग का भार।

वेग बढ़े या घटे जब, त्वरण करता काम,
समीकरणों में बंधकर चलता हर एक नाम।

ऊर्जा कभी नष्ट न होती, रूप बदलती जाए,
गतिज से स्थितिज बनकर सत्य समझाए।

कार्य और शक्ति बताते जीवन की पहचान,
भौतिकी में छुपा है प्रकृति का ज्ञान।

ध्वनि की तरंगें कानों तक आएँ,
आवृत्ति से स्वर ऊँच–नीच बतलाएँ।

प्रकाश की चाल, परावर्तन, अपवर्तन,
दर्पण–लेंस से दिखे नया दर्शन।

धारा बहे जब तारों में, क्षेत्र बने आसपास,
ओम का नियम बताए संबंध का प्रकाश।

चुंबक, धारा, प्रेरण की बात,
आधुनिक युग की यही है सौगात।

परमाणु के भीतर झाँके जब विज्ञान की दृष्टि,
क्वांटम ने बदली सोच की सृष्टि।

भौतिकी केवल विषय नहीं, सोचने का आधार,
इसी से बनता वैज्ञानिक संसार।

समय का महत्व

Chanchal Kumari
Semester-1st History(MJC) 25-29
M.K.S. College, Chandauna, Darbhanga

समय हमारे जीवन का सबसे अनमोल और मूल्यवान साधन है। यह न तो खरीदा जा सकता है और न ही वापस लाया जा सकता है। समय बहुत शक्तिशाली होता है क्योंकि अगर समय का सही उपयोग किया जाए तो कोई भी इंसान कामयाबी की बुलंदियों को छू सकता है। वहीं अगर समय का दुरुपयोग किया जाए तो व्यक्ति बर्बाद भी हो सकता है। आज तक जितने लोग भी सफल हुए हैं उन्होंने अपने समय का सदुपयोग किया है। इसीलिए विद्यालयों में भी छात्रों को समय के महत्व के बारे में अध्यापक समझाते हैं।

समय का महत्वः

पृथ्वी पर समय ही एक ऐसा धन है जो सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण और कीमती है। इसकी तुलना किसी भी वस्तु से करना संभव नहीं है। पूरी दुनिया समय के ऊपर ही निर्भर करती है और एक बार समय हाथ से निकल जाए तो फिर वापस वह कभी नहीं आता है। इसलिए समय का हमें हमेशा सही उपयोग करना चाहिए। इसलिए कभी कोई काम को कल के ऊपर नहीं छोड़ें और उसे तुरंत पूरा करें। हमें कभी भी इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि हमारा एक–एक मिनट बहुत ज्यादा कीमती होता है इसलिए इसे व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।

"काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब॥"

कबीरदास समय की महत्ता को बताते हैं।

समय का सदुपयोगः

किसी भी काम को सही समय पर करना ही समय का सदुपयोग कहलाता है। इसके लिए आप अपने समय को मैनेज कर सकते हैं जैसे कि– सबसे पहले आपको उन कामों को करना चाहिए जो आपके लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हों। ऐसे कामों को आपको तुरंत ही कर लेना चाहिए। हमेशा किसी भी काम को करने से पहले उसकी एक योजना बनाना लाभदायक रहता है, जिसकी वजह से कार्य करना आसान होता है।

समय का दुरुपयोगः

कुछ लोगों की आदत होती है कि वह जरूरी काम को छोड़कर सोचने में अपना अधिकतर समय बर्बाद कर देते हैं। इसलिए लोगों को ऐसा करने से बचना चाहिए और अपनी उत्पादकता को बढ़ाने के लिए अपने एक–एक मिनट का सही से इस्तेमाल करना चाहिए।

निष्कर्ष : मनुष्य को कभी भी यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि जितना वह समय बर्बाद करेगा उतना ही समय उसे भी

बर्बाद करेगा। इसलिए व्यर्थ के कामों में समय बर्बाद नहीं करें, अपने दिन की शुरुआत उन कामों से करें जो सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हैं।

"यूं व्यर्थ में ना करें समय अपना बर्बाद,
ऐसे तो ज्ञानी भी ना हो पाए आबाद।"

आधुनिकता का जाल स्मार्टफोन, प्लास्टिक का सच और कन्फ्यूज्ड हार्मोन्स

Chandan Kumar
Semester-1st Chemistry (MJC) 25-29

आज हम सब मॉडर्न तो हो गए हैं, लेकिन क्या कभी हमने सोचा है कि यह आधुनिकता हमसे क्या कीमत वसूल रही है? विज्ञान का मानना है कि हम स्मार्ट गैजेट्स का इस्तेमाल तो कर रहे हैं, लेकिन हमारी बायोलॉजिकल मशीन (हमारा शरीर) डम्ब और कमजोर होती जा रही है।इस आलेख में निम्नलिखित बिन्दुओं को रेखांकित कर सच जानने की कोशिश की जा रही है।

1. रिमोट कंट्रोल का हैक होना।
2. सोया और प्लास्टिक एक साइलेंट किलर।
3. विडंबना नकल करने की होड़।

विवरण:

1. रिमोट कंट्रोल का हैक होना।

बायोलॉजी के अनुसार, हमारे मस्तिष्क का एक छोटा सा हिस्सा होता है हाइपोथैलेमस। साइंस एक्सपर्ट धर्मेंद्र सर बताते हैं कि यह हमारे शरीर का हेडक्वार्टर है। यह न केवल शरीर के तापमान को, बल्कि हमारे इमोशन्स (जैसे गुस्सा, प्यार) और हार्मोन्स को भी नियंत्रित करता है समस्या यह है कि हमने इस हेडक्वार्टर को भ्रमित कर दिया है। जब हम पैकेट बंद चीजें, प्लास्टिक में पैक गर्म खाना, और जरूरत से ज्यादा सोया प्रोडक्ट्स (जैसे सोया चाप या प्रोसेस्ड चंक्स) खाते हैं, तो हम अनजाने में शरीर के अंदर भेज रहे होते हैं।

2. सोया और प्लास्टिक एक साइलेंट किलर।

धर्मेंद्र सर ने अपने लेक्चर में एक चौंकाने वाली बात कही थी अगर किसी रिप्रोडक्टि हेल्थ (यौन स्वास्थ्य) खराब करनी हो, तो उसे प्रोसेस्ड सोया प्रोडक्ट्स और प्लास्टिक में पैक खाना खिलाना शुरू कर दो।

इसके पीछे का विज्ञान इन चीजों में और माइक्रोप्लास्टि होते हैं। ये शरीर में जाकर हमारे प्राकृति क हार्मोन्स की नकल करते हैं। इससे शरीर को भ्रम होता है कि हार्मोन आ गया है, जबकि वह वास्तव में प्लास्टिक का केमिकल होता है।

इसका परिणाम

पुरुषों में टेस्टोस्टेरोन का स्तर तेजी से गिर रहा है। आज के 30 साल के युवाओं का हार्मोनल लेवल वैसा ही है, जैसा पहले 60 साल के बुजुर्गों का हुआ करता था।

महिलाओं में कम उम्र में ही प्यूबर्टी आ रही है और PCOD/PCOS जैसी बीमारियाँ एक महामारी का रूप ले चुकी हैं।

3. विडंबना नकल करने की होड़।

दुनिया का सबसे बड़ा विरोधाभास यह है कि हम जिस ''कूल लाइफस्टाइल'' (देर रात तक जागना, पिज्जा–बर्गर खाना) के पीछे भाग रहे हैं, उसे छोड़ कर पश्चिमी देश (जैसे अमेरिका और यूरोप) ''भारतीय जीवनशैली'' को अपना रहे हैं। वे हल्दी–दूध और योग को अपना रहे हैं, जबकि कि हम उनकी पुरानी गलतियों को नया फैशन मानकर केमिकल्स का सेवन कर रहे हैं।

साइंस फैक्ट चेक (प्रमाणित तथ्य)

ये बातें केवल राय नहीं, बल्कि वैज्ञानिक रूप से सिद्ध तथ्य हैं, जैसेः–

'डॉ. शाना स्वानः मशहूर एनवायर्नमेंटल और रिप्रोडक्टिव एपिडेमियोलॉजिस्ट हैं। उन्होंने अपनी किताब "Count Down" में साबित किया है कि कैसे प्लास्टिक और प्रोसेस्ड फूड हमारी फर्टिलिटी और हार्मोर्मोन्स को नष्ट कर रहे हैं।

NIESH: अमेरिका की इस प्रतिष्ठित स्वास्थ्य संस्था ने विस्तार से प्रलेखित किया है कि ये केमिकल्स हमारे शरीर के लिए कितने खतरनाक हैं।

निष्कर्ष

दोस्तों आधुनिक या ''मॉडर्न'' होने का अर्थ बीमार होना नहीं है। असली समझदारी तकनीक का उपयोग करने में है, उसका गुलाम बनने में नहीं। प्रोसेस्ड फूड का सेवन कम करें, शारीरिक परिश्रम करें और प्लास्टिक को अपनी जीवनशैली से बाहर करें। याद रखें, करियर तो दोबारा बन सकता है, लेकिन शरीर का कोई 'स्पेयर पार्ट' बाजार में नहीं मिलता। अतः बनावटीपन को छोड़ हमें प्रकृ ति से जुड़ना चाहिए।

जल प्रबंधन : सतत विकास, वैज्ञानिक नवाचार एवं भविष्य की चुनौतियाँ

समीर नंदन
स्नातकोत्तर छात्र, मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय,
चंदौना अध्ययन केन्द्र

जल पृथ्वी पर जीवन का आधार तथा सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय विकास का प्रमुख संसाधन है। यद्यपि पृथ्वी का लगभग 71% भाग जल से आच्छादित है, किन्तु कुल जल का केवल लगभग 2.5% ही मीठा जल है, जिसमें से अधिकांश हिमनदों एवं भूजल के रूप में विद्यमान है। जनसंख्या वृद्धि, तीव्र शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, जलवायु परिवर्तन तथा भूजल के अनियंत्रित दोहन के कारण विश्व अभूतपूर्व जल संकट की ओर अग्रसर है। भारत भी इस चुनौती से अछूता नहीं है। ऐसे परिदृश्य में जल प्रबंधन केवल जल संसाधनों के संरक्षण तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह वैज्ञानिक, तकनीकी तथा सामाजिक दृष्टिकोण से जल के समुचित उपयोग, पुनर्चक्रण एवं सतत संरक्षण का व्यापक विषय बन चुका है। प्रस्तुत लेख में जल प्रबंधन के वैज्ञानिक आधार, आधुनिक तकनीकों, भारत की चुनौतियों तथा सतत विकास लक्ष्यों के संदर्भ में इसकी भूमिका का विश्लेषण किया गया है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में जल को जीवन, समृद्धि एवं पवित्रता का प्रतीक माना गया है। ऋग्वेद में जल को औषधि तथा जीवनदाता कहा गया है। आधुनिक विज्ञान भी इस तथ्य की पुष्टि करता है कि जल के बिना जीवन की कल्पना असंभव है। मानव शरीर का लगभग 60-70 प्रतिशत भाग जल से निर्मित है तथा कृषि, उद्योग, ऊर्जा उत्पादन, जैव विविधता एवं संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र का अस्तित्व भी जल पर निर्भर करता है।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार विश्व के अरबों लोग आज भी सुरक्षित पेयजल एवं स्वच्छता सुविधाओं से वंचित हैं। दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा का असमान वितरण, सूखा तथा बाढ़ जैसी चरम प्राकृतिक घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में जल संसाधनों का वैज्ञानिक, समन्वित एवं सतत प्रबंधन समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है।

जल संकट : वैश्विक एवं भारतीय परिदृश्य

भारत विश्व की लगभग 18 प्रतिशत जनसंख्या का निवास स्थान है, जबकि इसके पास विश्व के कुल मीठे जल संसाधनों का केवल लगभग 4 प्रतिशत भाग उपलब्ध है। प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता निरंतर घट रही है तथा अनेक राज्यों में भूजल स्तर चिंताजनक गति से नीचे जा रहा है। अनियोजित शहरीकरण, वनों की कटाई, जलाशयों का अतिक्रमण तथा जल प्रदूषण इस संकट को और अधिक गंभीर बना रहे हैं।

भारत में उपलब्ध मीठे जल का लगभग 80 प्रतिशत भाग कृषि क्षेत्र में उपयोग किया जाता है। परंपरागत सिंचाई पद्धतियों में जल की अत्यधिक बर्बादी होती है। इसके अतिरिक्त औद्योगिक

अपशिष्ट, घरेलू सीवेज तथा कृषि में प्रयुक्त रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशक नदियों और भूजल को प्रदूषित कर रहे हैं।

जल प्रबंधन की अवधारणा :

जल प्रबंधन का अभिप्राय जल संसाधनों के वैज्ञानिक, योजनाबद्ध, न्यायसंगत एवं सतत उपयोग, संरक्षण तथा पुनर्भरण से है। इसका उद्देश्य केवल जल की उपलब्धता बढ़ाना नहीं, बल्कि उसकी गुणवत्ता बनाए रखना तथा भावी पीढ़ियों के लिए पर्याप्त एवं सुरक्षित जल संसाधनों का संरक्षण करना भी है।

प्रभावी जल प्रबंधन के प्रमुख आयाम हैं

वर्षा जल संचयन

भूजल पुनर्भरण

जल उपयोग दक्षता में वृद्धि

अपशिष्ट जल का शोधन एवं पुनर्चक्रण

जल प्रदूषण नियंत्रण

जन–जागरूकता एवं सामुदायिक सहभागिता

जल प्रबंधन का वैज्ञानिक आधार

भौतिकी एवं अभियंत्रण विज्ञान जल प्रबंधन की आधारशिला हैं। द्रव यांत्रिकी, बर्नौली सिद्धांत, दाब, प्रवाह दर, ऊर्जा संरक्षण तथा हाइड्रोलिक प्रणालियों के सिद्धांत जल वितरण एवं सिंचाई प्रणालियों की दक्षता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वर्तमान समय में जल प्रबंधन के क्षेत्र में अनेक आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है, जैसे-

भौगोलिक सूचना प्रणाली द्वारा जल संसाधनों का मानचित्रण।

रिमोट सेंसिंग द्वारा जलाशयों एवं भूजल क्षेत्रों का आकलन।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा जल मांग का पूर्वानुमान एवं वितरण का अनुकूलन।

स्मार्ट वाटर मीटरिंग द्वारा जल उपभोग की सतत निगरानी।

इन तकनीकों के माध्यम से जल की बर्बादी कम होती है तथा संसाधनों का अधिक कुशल एवं प्रभावी उपयोग संभव हो पाता है।

वर्षा जल संचयन एवं भूजल संरक्षण :

भारत में अधिकांश वर्षा केवल कुछ महीनों में होती है, जिसका बड़ा भाग बहकर नदियों के माध्यम से समुद्र में चला जाता है। यदि इस जल का वैज्ञानिक ढंग से संचयन किया जाए तो भूजल स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है।

वर्षा जल संचयन के प्रमुख लाभ हैं

भूजल स्तर में वृद्धि।

पेयजल संकट में कमी।

शहरी जलभराव की समस्या में कमी।

सिंचाई हेतु अतिरिक्त जल की उपलब्धता।

जल की गुणवत्ता में सुधार।

इसी कारण अनेक राज्यों में भवन निर्माण के साथ वर्षा जल संचयन प्रणाली को अनिवार्य किया गया है।

कृषि एवं जल प्रबंधन :

कृषि क्षेत्र जल का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। इसलिए जल संरक्षण की दृष्टि से आधुनिक सिंचाई तकनीकों का उपयोग अत्यंत आवश्यक है। ड्रिप सिंचाई द्वारा 40-60 प्रतिशत तक जल की बचत संभव है, जबकि स्प्रिंकलर सिंचाई शुष्क क्षेत्रों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है। इसके अतिरिक्त मृदा नमी संरक्षण तकनीकें, कम जल की आवश्यकता वाली फसलों का चयन तथा मौसम आधारित सिंचाई प्रबंधन जल उपयोग दक्षता को बढ़ाते हैं।

जल प्रदूषण एवं अपशिष्ट जल प्रबंधन :

स्वच्छ जल की उपलब्धता केवल संरक्षण से नहीं, बल्कि प्रदूषण नियंत्रण से भी सुनिश्चित होती है। औद्योगिक अपशिष्ट, घरेलू सीवेज तथा कृषि रसायन जल स्रोतों को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं।

उपचारित अपशिष्ट जल का उपयोग उद्योगों, बागवानी, निर्माण कार्यों तथा कृषि सिंचाई में किया जा सकता है। इससे स्वच्छ मीठे जल पर पड़ने वाला दबाव कम होता है तथा जल संसाधनों का सतत उपयोग संभव होता है।

जलवायु परिवर्तन एवं जल सुरक्षा :

वैश्विक तापवृद्धि के कारण वर्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। कहीं अत्यधिक वर्षा एवं बाढ़ तो कहीं दीर्घकालिक सूखे की स्थिति उत्पन्न हो रही है। हिमालयी हिमनदों के तीव्र पिघलने से भविष्य में जल संसाधनों पर गंभीर प्रभाव पड़ने की आशंका है।

ऐसी परिस्थितियों में जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जलागम क्षेत्र विकास, नदी पुनर्जीवन, आर्द्रभूमियों का संरक्षण, वनीकरण तथा जल दक्ष तकनीकों के व्यापक प्रसार पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।

सतत विकास में जल प्रबंधन की भूमिका :

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य का उद्देश्य सभी के लिए स्वच्छ जल एवं स्वच्छता की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। जल प्रबंधन खाद्य सुरक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन से मुकाबला तथा पर्यावरण संरक्षण जैसे अनेक सतत विकास लक्ष्यों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है।

विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय के प्रणेताः युगद्रष्टा पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

सुधांशु कश्यप
स्नातकोत्तर छात्र, मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय,
चंदौना अध्ययन केन्द्र

इक्कीसवीं शताब्दी विज्ञान, प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तीव्र विकास का युग है। मानव ने अंतरिक्ष अन्वेषण, क्वांटम प्रौद्योगिकी, नैनो–विज्ञान और जैव–प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। इसके साथ ही मानसिक तनाव, पर्यावरणीय संकट, नैतिक पतन तथा सामाजिक असंतुलन जैसी चुनौतियाँ भी समानांतर रूप से बढ़ी हैं। ऐसे समय में विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय की आवश्यकता पहले से अधिक अनुभव की जा रही है। इस समन्वित दृष्टि के प्रमुख प्रवर्तकों में युगद्रष्टा पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने वैज्ञानिक चिंतन, आध्यात्मिक साधना तथा सामाजिक पुनर्निर्माण को एकीकृत करते हुए मानव जीवन के समग्र विकास की अवधारणा प्रस्तुत की। यह लेख उनके वैज्ञानिक–आध्यात्मिक चिंतन का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

विज्ञान का उद्देश्य प्रकृति के नियमों की खोज करना है, जबकि अध्यात्म मानव चेतना, नैतिकता और आत्मबोध का अन्वेषण करता है। लंबे समय तक इन्हें विरोधी विचारधाराओं के रूप में प्रस्तुत किया गया, किंतु भारतीय ज्ञान–परंपरा में दोनों को परस्पर पूरक माना गया है। आधुनिक युग में इस समन्वित दृष्टि को पुनर्स्थापित करने का उल्लेखनीय प्रयास पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने किया।

उनका मानना था कि विज्ञान के बिना अध्यात्म अंधविश्वास का रूप ले सकता है, जबकि अध्यात्म के बिना विज्ञान मानवीय मूल्यों से विमुख होकर विनाशकारी भी सिद्ध हो सकता है। अतः ज्ञान और विवेक, प्रयोग और अनुभव, तर्क और संवेदना, इन सभी का संतुलन ही मानव सभ्यता को स्थायी प्रगति की ओर ले जा सकता है।

जीवन परिचय एवं वैचारिक पृष्ठभूमि :

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का जन्म 20 सितम्बर 1911 को उत्तर प्रदेश के आगरा जनपद स्थित आँवलखेड़ा ग्राम में हुआ। बाल्यकाल से ही उनमें आध्यात्मिक प्रवृत्ति, अनुशासन और समाजसेवा की भावना विद्यमान थी। स्वतंत्रता आंदोलन में सहभागिता के पश्चात उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन नैतिक पुनर्जागरण और सांस्कृतिक नवजागरण के लिए समर्पित कर दिया।

उन्होंने अखिल विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुंज (हरिद्वार) तथा ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना कर आध्यात्मिक साधना, नैतिक शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान को एक साझा मंच प्रदान किया। उनका उद्देश्य किसी संप्रदाय का विस्तार नहीं, बल्कि वैज्ञानिक चेतना एवं मानवीय मूल्यों का प्रसार था।

विज्ञान और अध्यात्म : विरोध नहीं, पूरकता :

विज्ञान के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्मांड निश्चित प्राकृतिक नियमों के अनुसार संचालित होता है। न्यूटन के गति नियमों से लेकर आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धांत तथा क्वांटम यांत्रिकी तक विज्ञान निरंतर प्रकृति के रहस्यों को उद्घाटित कर रहा है।

दूसरी ओर अध्यात्म मानव के आंतरिक विचार, भावनाएँ, चेतना और नैतिकता का अध्ययन करता है। आचार्य श्री का मत था कि बाह्य जगत का विज्ञान और अंतर्जगत का विज्ञान, दोनों मिलकर ही पूर्ण ज्ञान की रचना करते हैं।

यह दृष्टिकोण आधुनिक अंतर्विषयी शोध की भावना से मेल खाता है, जहाँ भौतिकी, जीवविज्ञान, मनोविज्ञान, तंत्रिका–विज्ञान तथा दर्शन परस्पर संवाद स्थापित कर रहे हैं।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान : वैज्ञानिक अध्यात्म की दिशा में एक प्रयास

सन् 1979 में स्थापित ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान का उद्देश्य योग, ध्यान, यज्ञ तथा मंत्र–जप जैसी भारतीय आध्यात्मिक परम्पराओं के प्रभावों का आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों की सहायता से अध्ययन करना था।

इस संस्थान में जैव–विद्युत संकेत, मस्तिष्कीय गतिविधियों, शारीरिक प्रतिक्रियाओं तथा मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित अनेक अध्ययन किए गए। यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इन अध्ययनों के कुछ निष्कर्ष प्रेरणादायक अवश्य हैं, किन्तु आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर किसी भी निष्कर्ष की व्यापक स्वीकृति के लिए स्वतंत्र तथा सहकर्मी–समीक्षित अनुसंधानों की आवश्यकता होती है।

यही वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्वयं आचार्य श्री के विचारों के अनुरूप भी है, क्योंकि वे तर्क, परीक्षण और अनुभव पर बल देते थे।

भौतिकी और चेतना : संवाद की संभावनाएँ

भौतिकी का मूल विषय पदार्थ, ऊर्जा, समय और अंतरिक्ष है, जबकि चेतना का अध्ययन मुख्यतः तंत्रिका–विज्ञान, मनोविज्ञान और दर्शन के अंतर्गत किया जाता है। आज भी "चेतना क्या है?" विज्ञान के सबसे जटिल प्रश्नों में से एक है।

कुछ लोकप्रिय चर्चाओं में क्वांटम भौतिकी और चेतना के बीच प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करने का प्रयास किया जाता है, परंतु वर्तमान वैज्ञानिक सहमति ऐसी धारणाओं का निर्णायक समर्थन नहीं करती। इसलिए इन विषयों पर विवेकपूर्ण और प्रमाण–आधारित दृष्टिकोण आवश्यक है।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने भी चेतना के विकास को आत्मानुशासन, ध्यान, सद्विचार और नैतिक जीवन से जोड़ा। इसे आधुनिक मनोविज्ञान एवं तंत्रिका–विज्ञान के संदर्भ में अध्ययन का विषय माना जा सकता है, न कि केवल आस्था का।

पर्यावरण, ऊर्जा और यज्ञ का वैज्ञानिक विमर्श

आचार्य श्री ने प्रकृति संरक्षण, वृक्षारोपण और संतुलित जीवनशैली पर विशेष बल दिया। आज जब जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संकट और पर्यावरणीय असंतुलन वैश्विक चिंताएँ बन चुके हैं, तब उनका यह दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

यज्ञ के संदर्भ में उन्होंने उसे केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सहयोग, त्याग और पर्यावरणीय संतुलन का प्रतीक माना। यज्ञ के पर्यावरणीय प्रभावों पर समय–समय पर विभिन्न अध्ययन हुए हैं, किन्तु इनके सभी दावों को वैज्ञानिक रूप से स्थापित मान लेना उचित नहीं होगा। इस क्षेत्र में नियंत्रित एवं उच्च–गुणवत्ता वाले अनुसंधानों की अभी भी आवश्यकता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नैतिक उत्तरदायित्व :

विज्ञान हमें शक्ति देता है, किंतु उस शक्ति का उपयोग किस दिशा में होगा, इसका निर्णय नैतिकता करती है। परमाणु ऊर्जा इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। वही ऊर्जा विद्युत उत्पादन का साधन भी बन सकती है और विनाशकारी हथियार का भी।

आचार्य श्री का विचार था कि ज्ञान का उद्देश्य केवल सूचना अर्जित करना नहीं, बल्कि मानवता का कल्याण होना चाहिए। यह दृष्टिकोण आधुनिक विज्ञान नीति, जैव–नैतिकता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता तथा सतत विकास की अवधारणाओं से भी सामंजस्य रखता है।

युवा वैज्ञानिकों के लिए संदेश :

विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का संदेश अत्यंत प्रेरक है। वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अनुशासन, सत्यनिष्ठा, निरंतर अध्ययन तथा मानवीय संवेदनशीलता को समान महत्त्व देते थे।

एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक केवल प्रयोगशाला में सफल नहीं होता, बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायी भी होता है। विज्ञान का अंतिम उद्देश्य मानव जीवन को अधिक सुरक्षित, स्वस्थ, न्यायपूर्ण और समृद्ध बनाना है। यही भावना वैज्ञानिक अध्यात्म का वास्तविक स्वरूप है।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का योगदान केवल आध्यात्मिक या सामाजिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। उन्होंने विज्ञान और अध्यात्म के मध्य संवाद स्थापित करने का एक वैचारिक आधार प्रस्तुत किया। यद्यपि उनके अनेक विचारों का आधुनिक वैज्ञानिक कसौटी पर निरंतर परीक्षण और अनुसंधान आवश्यक है, फिर भी उनकी मूल अवधारणा वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नैतिक जीवन और आध्यात्मिक संवेदनशीलता का समन्वय आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

पल्लव प्रकाश

मन की डायरी

Sanjana Kumari
Semester: 5, Political Science
College: MKS College Chanduna, Darbhanga

न जाने कितनी लड़कियाँ
भागती हैं मन ही मन,
अपने रास्तों
अपनी डायरी में।
समयभर भागी हुई लड़कियों से
उनकी आवादी बहुत बड़ी है,
यही सबसे बड़ी सच्चाई है।
समयभर भागने की हिम्मत
कुछ ही कर पाती हैं,
बाकी सब
डायरी में भागती हैं।
रात के अँधेरों में भागती हैं,
और सुबह फिर वही चेहरा लगाकर
चाय बनाने में जुट जाती हैं।
जब कोई लड़की घर से भागती है,
परिवार की इ़ज़्ज़त चली जाती है।
लोग तरह–तरह की बात करते हैं,
क्योंकि हमारे समाज में
लड़की के भागने को
विद्रोह नहीं, पाप माना जाता है।
जबकि मन ही मन भागने वाली लड़कियों की
आबादी बहुत बड़ी है।
हर घर में एक लड़की है,
जो चुपचाप उड़ना चाहती है।
औरत पैदा नहीं होती,
बनाई जाती है।
और जो बनाई गई है,
वह भागे तो समाज को
खतरा लगता है।
लेकिन असली सवाल यह है कि,
क्या तुम्हारे लिए कोई लड़की भागी है?

इसका सीधा और सरल मतलब,
जो मुझे समझ में आता है,
वह यह है...
क्या किसी ने कभी
तुम्हारे सामने
उसकी सीक्रेट डायरी के पन्ने
खोले हैं?
क्या किसी ने
तुम्हारे सामने
वह बोझ रखा है,
जो वह सालों से
मन ही मन ढो रही थी?
अगर हाँ,
तो तुमने उस भागती हुई रूह को
ठहरने की जगह दी है।
और अगर नहीं,
तो शायद तुम भी
उसी दीवार का हिस्सा हो,
जिससे वह भागना चाहती है।

काश

इस आज़ाद देश के,
एक आज़ाद राज्य में,
तो एक आज़ाद शहर,
जिसके एक आज़ाद गाँव में,
है एक आज़ाद घर,
है जिसकी आज़ाद छत पर
बैठी एक लड़की
कैद महसूस करती है।
न जाने क्यों,
वह बाहर निकलने से डरती है।
सोचती है कि,
महफ़ूज़ रहना सब सिखाते हैं,
महफ़ूज़ रखना
कोई क्यों नहीं सिखाता?
सोचती है कि,

जब आवाज़ उठाने की बात आती है,
तो क्यों आवाज़ें
लाश बन जाती हैं,
जो मौके आने पर
ख़ामोश बन जाती हैं।
काश, उसे दिन घर वक़्त से जाती।
काश, कि साथ में होता कोई।
काश, वह रास्ता ना लेती।
काश, कि चेहरा छुपा लेती।
दरिंदगी को
काश, क्यों और कैसे के पीछे
ढक दिया जाता है।
सवालों का एक बड़ा सा ढेर बनाकर,
इंसाफ़ को सबसे नीचे
रख दिया जाता है।

ज़िंदगी – सपनों की उड़ान

Mahto Gunjan Kumari Jitendra
Semester – V, Physics -2023–27
M-K-S- College Chandauna Darbhanga

हर सुबह नई किरणें लाती,
जीवन में उम्मीद जगाती।
छोटे–छोटे सपने लेकर,
मैं चलती हूँ आगे बढ़कर।
कभी धूप तो कभी छाया है,
हर पल ने कुछ सिखलाया है।
गिरकर फिर से उठना सीखा,
मुश्किल से भी लड़ना सीखा।
मेहनत मेरी सबसे बड़ी ताकत,
हौसला मेरा सच्ची दौलत।
राह कठिन हो या आसान,
रुकना मेरा नहीं अरमान।
गाँव की ज्योति साथ लिए,
सपनों को अपने पास लिए।
माता–पिता का मान बढ़ाना,
अपने कर्मों से नाम कमाना।
हर चुनौती को अपनाऊँगी,
एक नई पहचान बनाऊँगी।
मंज़िल चाहे दूर खड़ी हो,
मेरी उम्मीद कभी न बड़ी हो।
आज विद्यार्थी, कल उड़ान हूँ,
अपने भविष्य की पहचान हूँ।

मेहनत की असली जीत

निशा कुमारी
बी.एससी. (ऑनर्स) भौतिकी, पंचम सेमेस्टर
एम.के.एस. कॉलेज, त्रिमुहान–चंदौना, दरभंगा

मेहनत की राह कठिन सही,

पर मंज़िल उससे दूर नहीं।

जो गिरकर फिर उठ जाता है,

वही सफलता को पाता है।

धैर्य जिसका सच्चा साथी,

हिम्मत जिसकी सबसे बड़ी थाती।

पसीने की हर एक बूँद,

बन जाती है सफलता का फूल।

सपनों को जो सच करता है,

संघर्ष से कभी न डरता है।

हार नहीं, बस सीख मिलती है,

मेहनत से ही तक़दीर बदलती है।

जीवन का यही है सच्चा गीत,

मेहनत में ही छिपी है जीत।

कर्म ही सबसे बड़ा प्रमाण,

यही बनाता मानव महान।

Muslim Female Students of Bihar and Higher Education in Physics: A Data-Based Analytical Study

Arshia Tazeen
10+2 Assistant Teacher, Department of Physics
Upgrade High school, Sidhap Parsahi, Madhubani

Introduction

Science and technology education is considered a key driver of national development in India. However, social and gender disparities continue to be visible in higher education participation. According to the All-India Survey on Higher Education (AISHE 2020–21), the Gross Enrolment Ratio (GER) of Muslim students in higher education in Bihar is approximately 6.39%, while the GER of Muslim female students is around 5.90%.

Given that Muslims constitute about 17.7% of Bihar's population (Caste-Based Survey, 2022), their representation in higher education—particularly that of women—remains significantly below their population share. The gap becomes even more pronounced in science disciplines such as Physics, especially at the postgraduate (M.Sc.) and doctoral (Ph.D.) levels.

Physics, as a discipline, requires strong mathematical foundations, laboratory exposure, and research-oriented academic environments. These structural and socio-economic requirements create additional barriers for marginalized communities, including Muslim women in Bihar.

Objectives of the Study

To analyse the participation of Muslim female students in Physics education in Bihar.
To examine their representation at undergraduate, postgraduate (M.Sc.), and doctoral (Ph.D.) levels.
To identify socio-economic and institutional barriers affecting their participation.
To propose policy-level and institutional recommendations.

Methodology

This study is based on secondary data analysis. The major sources include:
All India Survey on Higher Education (AISHE 2020–21)
University Grants Commission (UGC Annual Reports)
National Family Health Survey (NFHS-5, 2019–21)
Ministry of Minority Affairs (Scholarship Data)
Annual reports of major universities in Bihar, including:
Lalit Narayan Mithila University
Patna University

Magadh University
BRA Bihar University
The data have been analyzed using comparative and percentage-based interpretation methods.

Findings

(i) Undergraduate Level (B.Sc. Physics)
Muslim female participation in B.Sc. Physics programs in Bihar is relatively low compared to Arts and Social Sciences streams. Weak foundational preparation in Mathematics and limited laboratory exposure at the school level are major contributing factors.
(ii) Postgraduate Level (M.Sc. Physics)
At the national level, Muslim students account for less than 5% of total postgraduate enrolment, and Muslim female participation in science subjects such as Physics is estimated at approximately 3–4%. In Bihar, the trend reflects similar patterns, with lower representation in Physics compared to Humanities.
(iii) Doctoral Level (Ph.D. in Physics)
At the Ph.D. level, Muslim representation nationally is around 2–3%, with Muslim women comprising approximately 2% or less of total doctoral enrolment. This indicates a significant decline in representation as the academic level advances.
(iv) Educational Background Constraints
According to NFHS-5, only about 18% of Muslim women in India have completed 12th grade or above, and nearly 25% have never attended school. This limited educational base directly affects progression into higher education, particularly in demanding disciplines like Physics.

Discussion

The underrepresentation of Muslim female students in Physics in Bihar can be attributed to multiple interconnected factors:
Socio-economic disadvantages and low household income
Early marriage and domestic responsibilities
Lack of science infrastructure in rural and minority-dominated regions
Limited access to coaching for competitive exams such as NET/JRF
Insufficient mentorship and female role models in STEM
Although scholarships and fellowships are provided by UGC and the Ministry of Minority Affairs, awareness and accessibility remain uneven. Institutional mentoring systems are also limited in many state universities.

Recommendations

Strengthening Mathematics and Physics education at the secondary level.
Targeted scholarships for Muslim female students in STEM disciplines.
Establishing mentorship and research guidance programs in universities.
Providing NET/JRF coaching support in minority-dominated districts.
Expanding digital laboratories and virtual learning resources.

Promoting female physicists as role models through outreach programs

Conclusion

The participation of Muslim female students in higher education in Physics in Bihar remains significantly below their demographic proportion. Representation declines progressively from undergraduate to postgraduate and doctoral levels, forming a narrowing academic pyramid.

Targeted policy interventions, improved science infrastructure, financial assistance, and structured mentorship programs are essential to bridge this gap. Enhancing Muslim women's participation in Physics will contribute not only to gender equity and social justice but also to the broader scientific and technological advancement of Bihar and India.

References

All India Survey on Higher Education (2020–21). AISHE Final Report. Ministry of Education, Government of India.

University Grants Commission. Annual Report. Government of India.

National Family Health Survey (2019–21). NFHS-5 Report.

Ministry of Minority Affairs. Scholarship and Fellowship Data Reports.

Government of Bihar (2022). Caste-Based Survey Report.

Annual Reports of Lalit Narayan Mithila University, Patna University, Magadh University, and BRA Bihar University.

इंसानियत

Shayka Asif
MIC Physics (Session 2024-28)

इंसानियत वह अमूल्य गुण है जो मनुष्य को अन्य सभी जीवों से श्रेष्ठ बनाता है। यह केवल दया, करुणा और सहानुभूति का नाम नहीं, बल्कि दूसरों के दुख–दर्द को समझकर उनकी सहायता करने की सच्ची भावना है। जब किसी व्यक्ति के हृदय में प्रेम, सम्मान, संवेदना और सहयोग का भाव होता है, तभी उसके व्यक्तित्व में वास्तविक इंसानियत झलकती है।

आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है। मानव निरंतर प्रगति के नए आयाम स्थापित कर रहा है, परंतु इस तेज रफ्तार जीवन में इंसानियत कहीं न कहीं पीछे छूटती जा रही है। लोग धन, पद और सफलता की दौड़ में इतने व्यस्त हो गए हैं कि उन्हें अपने आसपास के लोगों के दुख–दर्द का एहसास तक नहीं होता। आज अधिकांश लोग अपनी पहचान धन–संपत्ति और बाहरी दिखावे से बनाना चाहते हैं, जबकि धन केवल हमारी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता हैय वह समय, बचपन की यादें, अपनों का स्नेह और सच्चे रिश्ते कभी नहीं खरीद सकता।

जब हम किसी जरूरतमंद की सहायता करते हैं, तो हमें आत्मिक संतोष और अनोखी खुशी का अनुभव होता है। इंसानियत दिखाने के लिए किसी बड़े कार्य की आवश्यकता नहीं होती। किसी भूखे को भोजन देना, घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुँचाना, दुखी मन को सांत्वना देना, किसी असहाय की बात धैर्यपूर्वक सुन लेना या किसी वृद्ध की सहायता करनाकृये छोटे–छोटे कार्य ही इंसानियत की सबसे सुंदर पहचान हैं।

एक छोटी–सी मदद किसी के जीवन में आशा की नई किरण जगा सकती है। हम कभी नहीं जानते कि सामने वाला व्यक्ति किन संघर्षों से गुजर रहा है। कई बार हमारे कुछ स्नेहपूर्ण शब्द किसी निराश व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान ला सकते हैं और उसके जीवन में नया उत्साह भर सकते हैं।

इंसानियत का सबसे महत्वपूर्ण आधार समानता की भावना है। जब हम धर्म, जाति, भाषा, रंग या आर्थिक स्थिति के भेदभाव से ऊपर उठकर प्रत्येक व्यक्ति को समान सम्मान देते हैं, तभी समाज में सच्ची शांति, सद्भाव और भाईचारा स्थापित होता है। नफरत और भेदभाव समाज को विभाजित करते हैं, जबकि प्रेम, सहयोग और सहानुभूति उसे सशक्त बनाते हैं।

आज पूरी दुनिया को सबसे अधिक आवश्यकता इंसानियत की है। यदि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन केवल एक छोटा–सा अच्छा कार्य करने का संकल्प ले, तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन की एक नई शुरुआत हो सकती है। हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि जैसा व्यवहार हम दूसरों से अपने लिए चाहते हैं, वैसा ही व्यवहार हमें भी दूसरों के साथ करना चाहिए।

अंततः, इंसानियत किसी पुस्तक का केवल एक अध्याय नहीं, बल्कि जीवन जीने की सर्वोत्तम कला है। जब हमारे हृदय में दया, प्रेम, करुणा और सहानुभूति का वास होता है, तभी हम सच्चे अर्थों में ‘‘इंसान’’ कहलाने के योग्य बनते हैं।

जादुई बीज का रहस्य

शीतल कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
एम.के.एस. कॉलेज, त्रिमुहान–चंदौना, दरभंगा

बहुत समय पहले पश्चिम चम्पारण के शिवालिक पर्वत की गोद में बसे जंगलों के बीच धमौरा नामक गाँव में आर्यन नाम का एक युवक रहता था। वह मेहनती, व्यवहारिक और ईमानदार था, किन्तु उसमें एक बड़ी कमी थीकृवह अत्यन्त अधीर था। वह चाहता था कि हर कार्य शीघ्र पूरा हो और उसका परिणाम तुरंत मिल जाए। असफलता मिलते ही वह निराश हो जाता था।

गाँव के एक छोर पर पीपल का विशाल वृक्ष था, जिसके नीचे यात्रियों और ग्रामीणों के विश्राम हेतु चबूतरा बना था। एक दिन वहाँ एक रहस्यमय वृद्ध यात्री विश्राम करने आया। वह अनुभवी व्यक्ति लोगों के मन की व्यथा समझ लेता था। उसी समय आर्यन भी अपने असफल व्यवसाय के कारण उदास बैठा था।

वृद्ध ने उसकी उदासी देखकर कहा, बेटा, असफलता अंत नहीं, बल्कि सीखने का एक चरण है। फिर उसने अपने झोले से लाल रंग की मटमैली पोटली निकाली और उसमें से एक बीज देते हुए कहा, यह धैर्य का जादुई बीज है। इसे अपनी सबसे कीमती मिट्टी में बो देना। यदि इसे बिना शिकायत, धैर्य और नियमित देखभाल से सींचोगे, तो यह तुम्हें वही देगा जो तुम चाहते हो। लेकिन जल्दबाजी की या बीच में छोड़ दिया, तो यह हमेशा के लिए सो जाएगा।

आर्यन ने बीज को एक सुंदर गमले में बो दिया, पर अपनी अधीरता नहीं छोड़ पाया। वह हर घंटे गमला देखने लगा। कभी अधिक पानी देता, कभी धूप में रखता, तो कभी उसकी चिंता करता। कई सप्ताह तक अंकुर न निकलने पर उसने निराश होकर गमले को एक कोने में रख दिया।

समय बीत गया। एक दिन सफाई करते समय उसकी नजर उसी उपेक्षित गमले पर पड़ी। उसने देखा कि उसमें एक छोटा–सा हरा अंकुर निकल आया था। तब उसे समझ आया कि जब उसने बीज पर अपनी इच्छा थोपनी चाही, तब वह नहीं बढ़ा लेकिन जब उसे अपनी गति से बढ़ने का अवसर मिला, तब वह अंकुरित हो गया।

उस दिन से आर्यन बदल गया। उसने पौधे को नियमित रूप से पानी देना शुरू किया। धीरे–धीरे उसके भीतर भी परिवर्तन आने लगा। वह अब घबराने के बजाय धैर्य रखना सीख गया।

एक दिन तेज आँधी और वर्षा आई। आर्यन पौधे को भीतर ले जाना चाहता था, पर उसने स्वयं को रोक लिया। उसने समझ लिया कि कठिनाइयाँ भी विकास का हिस्सा हैं। पौधा आँधी सहकर और अधिक मजबूत हो गया।

समय के साथ वह नन्हा पौधा एक विशाल वृक्ष बन गया। उस पर सुनहरे और सुगंधित फूल खिले, जिनकी महक पूरे गाँव में फैल गई। जो लोग पहले आर्यन की असफलताओं पर हँसते थे, वे अब उसकी प्रशंसा करने लगे।

आर्यन ने सबको बताया, यह जादुई बीज वास्तव में एक आईना था। इसने केवल पेड़ नहीं उगाया, बल्कि मेरे भीतर की अधीरता को भी समाप्त कर दिया।

अब उसे समझ आ गया था कि सफलता केवल लक्ष्य प्राप्त करना नहीं, बल्कि उस यात्रा में धैर्य, अनुशासन, निरंतर प्रयास और सही समय की प्रतीक्षा करना सीखना है। उसने अपने गाँव में एक पाठशाला खोली, जहाँ बच्चों को केवल पुस्तकें ही नहीं, बल्कि बीज से वृक्ष बनने की प्रक्रिया के माध्यम से धैर्य और निरंतरता का महत्व भी सिखाया जाता था।

सच ही कहा गया है सब्र का फल मीठा होता है।

शिक्षा

अभिनव कुमार गिरि
एम.के.एस. कॉलेज, त्रिमुहान–चंदौना, दरभंगा

उठो और पहचानो खुद को
तुम में छिपा अद्भूत शक्ति है,
अंधियारे से तुम मत डरनाय
शिक्षा ही सच्ची असली शक्ति है।
यह सिर्फ अक्षरों का ज्ञान नहीं
स्वाभिमान जगाती है हमको,
मुश्किल चाहे कितनी भी हो
हर राह आसान बनाती है यह।
पंख लगाकर आसमान में
तुमको उड़ना यह सिखलाएगी,
सपनों के सुंदर महलों को
सच कर यह दिखलाएगी।
आलस को तुम दूर भगाओ
मन में एक विश्वास जगाकर,
पुस्तकों को तू मित्र बना ले
मिट जाएंगे राहों के संकट।
बाधाएं आएंगी तो आने दो
तुम पीछे हरगिज मत हटना,
डटे रहोगे तो मिल जाएंगे
सारे ख्वाबों के मंजिल तुझको।।

शिक्षा व्यवस्था

गौरव कुमार सिंह
एम.के.एस. कॉलेज, त्रिमुहान–चंदौना, दरभंगा

शिक्षा केवल अक्षर–ज्ञान नहीं,
जीवन का उजियारा है।
अज्ञान के घोर अँधेरों में,
ज्ञान ही सच्चा सितारा है।
किताबों का बोझ बढ़ा इतना,
मन का आकाश सिमट गया।
अंकों की अंधी दौड़ में,
बचपन कहीं बिखर गया।
विद्यालय ज्ञान का मंदिर हो,
जहाँ संस्कारों का मान रहे।
विज्ञान संग मानवता भी,
हर हृदय में सदा विद्यमान रहे।
शिक्षक हों दीपक की लौ जैसे,
जो हर पथ को आलोकित करें।
विद्यार्थी बनें कर्मयोगी ऐसे,
जो राष्ट्र का गौरव निर्मित करें।
शिक्षा का उद्देश्य यही रहे,
हर जन का हो उत्थान यहाँ।
समता, सेवा, सत्य और श्रम से,
महके अपना हिन्दुस्तान यहाँ।
आओ ऐसी शिक्षा गढ़ें,
जिसमें मानवता का वास रहे।
ज्ञान, विवेक और चरित्र के संग,
भारत का उज्ज्वल विकास रहे।

मेरा महाविद्यालय : एम.के.एस. कॉलेज, चंदौना

श्वेता कुमारी
MJC (Zoology),5th Semester (2023-27)
एम.के.एस. कॉलेज, त्रिमुहान–चंदौना, दरभंगा

ज्ञान की ज्योति जहाँ प्रखर,
संस्कारों का है अनुपम धाम।
एम.के.एस. कॉलेज, चंदौना,
बढ़ाता शिक्षा का गौरव–नाम।
हरियाली से आच्छादित प्रांगण,
सपनों को देता नई उड़ान।
गुरुवर का स्नेहिल मार्गदर्शन,
बनता जीवन की सच्ची पहचान।
कला, विज्ञान और वाणिज्य का,
यह अनुपम ज्ञान–विहार।
श्रम, अनुशासन और सदाचार से,
उज्ज्वल होता हर परिवार।
पुस्तक, प्रयोगशाला, कक्षा में,
गूँजता नव–विज्ञान का स्वर।
प्रतिभाओं को देता अवसर,
खोलता भविष्य का सुंदर द्वार।
मिथिला की पावन संस्कृति का,
यह गौरवशाली अभिनंदन है।
चरित्र, कर्म और ज्ञान–पथ पर,
युवाओं का यह अभिनंदन है।
आओ मिलकर प्रण यह लें,
ज्ञान–दीप सदा जलाएँगे।
एम.के.एस. कॉलेज, चंदौना का,
विश्व में मान बढ़ाएँगे।
ज्ञान, सेवा और सत्य–पथ का,
यह अनुपम पावन आलय है।
हर विद्यार्थी के स्वर्णिम कल का,
यही प्रथम शुभ मंगलालय है।

पल्लव प्रकाश

The Little Canvas

Art by Tanay Atri
Class 4
Kendriya Vidyalaya 2, Pondicherry

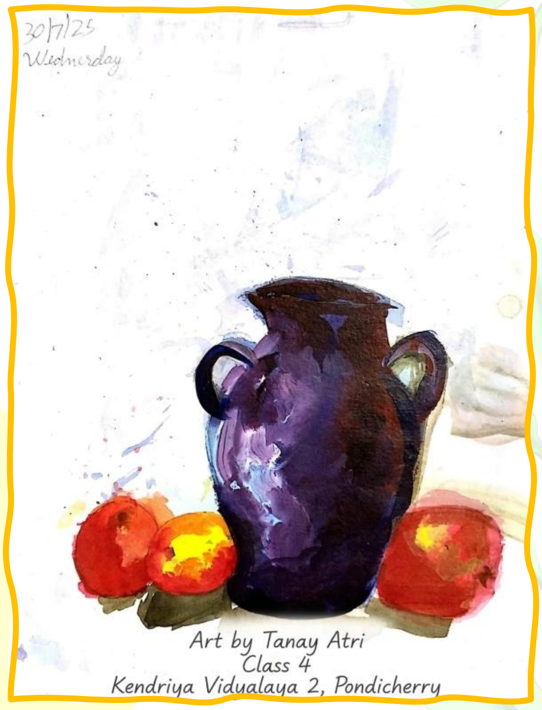

Art by Tanay Atri
Class 4
Kendriya Vidyalaya 2, Pondicherry

Art by Parv Pallav
Class 4
Mount Litera Zee School Darbhanga

Rudransh Rajshekhar
Class- UKG 'C'
Shalom Presidency School, Gurgaon

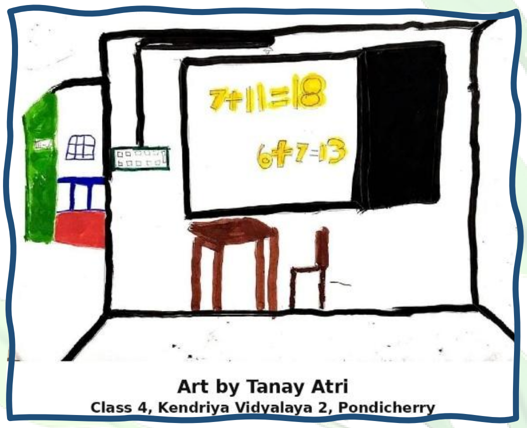

Art by Tanay Atri
Class 4, Kendriya Vidyalaya 2, Pondicherry

Art by - **Eliza Queen**
Crimson Anisha Global School, Pune
Grade - 2A CIE

Art by Abhigyan Sindhu • Class 4 • Mahatma Gandhi shishan sanstan, Darbhanga

Art by Ritika Shree, Class 2, Nehru Children Academy, Chahuta, Madhubani

Art by Anika Gupta
Class 2
Mount Litera Zee School Darbhanga

Art by Rudransh Rajshekhar
Class- UKG 'C'
Shalom Presidency School, Gurgaon

Art by Abhisinchan • Class 2 • Nehru Children Academy, Chahuta, Madhubani

पल्लव
प्रकाश

झरोखे से

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी रिपोर्ट

एम.के.एस. कॉलेज, त्रिमुहान-चंदौना, दरभंगा (ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा से संबद्ध) द्वारा "रामराज्य की संकल्पना एवं प्रासंगिकतारू रामायण काल से वर्तमान संदर्भ में" विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 22-23 अप्रैल, 2025 को किया गया। यह संगोष्ठी भारतीय सांस्कृतिक धरोहर, रामायणकालीन शासन–व्यवस्था तथा समकालीन सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य के बीच सेतु निर्माण के उद्देश्य से आयोजित की गई।

विषय की पृष्ठभूमि

रामराज्य की अवधारणा भारतीय चिंतन में आदर्श राज्य, न्यायपूर्ण शासन, जनकल्याण, नैतिकता तथा धर्मसम्मत आचरण के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित रही है। आधुनिक समय में लोकतंत्र, संविधानवाद, मानवाधिकार और सामाजिक न्याय के विमर्शों के बीच रामराज्य की संकल्पना की प्रासंगिकता पर वैचारिक पुनर्विचार आवश्यक है, जिसे ध्यान में रखते हुए संगोष्ठी का मुख्य विषय निर्धारित किया गया।

शैक्षणिक महत्व

"रामराज्य की संकल्पना एवं प्रासंगिकता रामायण काल से वर्तमान संदर्भ में" जैसे विषय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन सामाजिक विज्ञान, राजनीति विज्ञान, दर्शन एवं कानून की बहसों के बीच अंत:विषयक संवाद का अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों और शोधार्थियों को प्राचीन ग्रंथों में निहित शासन–नीतियों, नैतिक मूल्यों और आदर्श राज्य की अवधारणा को आधुनिक प्रशासन, नीति–निर्माण और नागरिक जीवन से जोड़कर समझने में सहायक होते हैं।

प्रमुख अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि

इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में विभिन्न प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों एवं सरकारी संस्थाओं से जुड़े विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया।

मुख्य अतिथि: ***प्रो. संजय कुमार चौधरी***, माननीय कुलपति, एल.एन.एम.यू., दरभंगा, बिहार।

विशिष्ट अतिथि: ***श्री जिवेश मिश्रा***, माननीय मंत्री, नगर विकास एवं आवास विभाग, बिहार सरकार। इन दोनों अतिथियों की उपस्थिति से कार्यक्रम को अकादमिक तथा प्रशासनिक दोनों स्तरों पर विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

विशिष्ट वक्ता एवं मुख्य वक्ता

संगोष्ठी में अंतरराष्ट्रीय एवं अंतर–विश्वविद्यालयी विद्वानों की भागीदारी रही:

विशिष्ट वक्ता: ***प्रो. संजीता वर्मा***, सेंटर डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू, नेपाल।

मुख्य वक्ता: ***प्रो. परमेश्वर कुमार बाजपेयी***, माननीय कुलपति, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार।

इन सभी विद्वानों की उपस्थिति से संगोष्ठी को अंतरराष्ट्रीय आयाम प्राप्त हुआ, विशेषकर नेपाल स्थित त्रिभुवन विश्वविद्यालय के प्रतिनिधित्व के कारण।

कार्यक्रम का संयोजन संस्कृत विभाग की ***डॉ. ममता पांडेय***, सहायक प्राध्यापिका द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य ***डॉ. रवीन्द्र नाथ तिवारी*** ने की।

संगोष्ठी में प्रो. संजीता वर्मा, केंद्रीय हिन्दी विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू (नेपाल) ने अपने व्याख्यान में रामराज्य की अवधारणा को सामाजिक न्याय, नैतिकता, समरसता एवं मानवीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि रामराज्य केवल एक आदर्श शासन व्यवस्था नहीं, बल्कि लोककल्याण, उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक चेतना का जीवंत प्रतीक है।

मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि ने अपने उद्बोधनों में रामायण के आदर्शों को वर्तमान समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक बताते हुए शिक्षा, सुशासन, नैतिक नेतृत्व तथा मानवीय मूल्यों के संवर्धन पर बल दिया। उन्होंने युवाओं से भारतीय सांस्कृतिक विरासत एवं जीवन–मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान किया।

संगोष्ठी के विभिन्न तकनीकी सत्रों में देश–विदेश के विद्वानों, शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों ने अपने शोध–पत्र प्रस्तुत किए। विचार–विमर्श के दौरान रामराज्य की अवधारणा, सुशासन, सामाजिक समरसता, नारी सम्मान, पर्यावरण संरक्षण तथा समकालीन चुनौतियों के संदर्भ में व्यापक चर्चा हुई। अंत में प्राचार्य डॉ. रवीन्द्र नाथ तिवारी ने सभी अतिथियों, वक्ताओं, प्रतिभागियों एवं आयोजन समिति के सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। राष्ट्रगान के साथ संगोष्ठी का सफल समापन हुआ।

हिन्दुस्तान

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

जाले/कमतौल, हिटी। चंदौना स्थित एमकेएस कॉलेज में 'रामराज की संकल्पना एवं प्रासंगिकताः रामायण काल से वर्तमान संदर्भ में' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में आयोजन किया गया। दूसरे दिन बुधवार के अंतिम सत्र का उद्घाटन नगर विकास एवं आवास मंत्री जीवेश कुमार ने किया।

मंत्री ने कहा कि प्रभु श्रीराम की भूमिका एक पुत्र के रूप में, एक मित्र के रूप में, एक भाई के रूप में, एक कुशल शासक के रूप में संसार के लिए अनुपम उदाहरण हैं। उन्होंने कहा कि रामराज्य की परिकल्पना तभी संभव होगी जब सभी लोग प्रभु

- एमकेएस कॉलेज चंदौना में कार्यक्रम
- मंत्री ने प्रभु को बताया अनुपम उदाहरण

श्रीराम के चरित्र का अनुकरण कर उनकी नितियों का अनुपालन करेंगे। कॉलेज के छात्र-छात्राओं एवं प्रधानाचार्य ने मंत्री को वर्तमान में कॉलेज में एक अकादमी भवन की कमी के बारे में अवगत कराया और पीजी स्तर तक की पढ़ाई शुरू करवाने का अनुरोध किया। इस पर मंत्री ने प्रयास करने का भरोसा दिलाया। इस मौके पर कॉलेज के पूर्व छात्र डॉ. मृत्युंजय कुमार को प्रधानाचार्य ने सम्मानित किया।

बुधवार को अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल मंत्री जीवेश कुमार।

पहले दिन के मंगलवार को संगोष्ठी का उद्घाटन प्रधानाचार्य डा. रविंद्र नाथ तिवारी, संयोजक डॉ. ममता पांडेय और आयोजन सचिव मुकेश कुमार ने किया। सत्र को प्रो. राजकिशोर सिंह, डॉ. संजय कुमार और डॉ. उदय सिंह आदि ने संबोधित किया। सभी सत्रों में लगभग 70 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। मंच संचालन डॉ. विनय कुमार ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कॉलेज के डॉ. लाल बाबू सहनी, डॉ. बबीता कुमारी डॉ. खुशबू कुमारी, डॉ. बबीता कुमारी, डॉ. जितेंद्र कुमार, डॉ. इरशाद आलम, डॉ. संजय कुमार हाजरा, आदि सक्रिय रहे।

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में आयोजन

P3 Police Public Politics

दैसा। बिहार में चंदौना स्थित एमकेएस कॉलेज, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा में रामराज की संकल्पना एवं प्रासंगिकता रामायण काल से वर्तमान संदर्भ में विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में आयोजन किया गया । दूसरे दिन बुधवार के अंतिम सत्र का उद्घाटन नगर विकास एवं आवास मंत्री श्री जीवेश कुमार ने किया और कहा कि प्रभु श्री राम की भूमिका एक पुत्र के रूप में एक मित्र के रूप में एक भाई के रूप में एक कुशल शासक के रूप में संसार के लिए अनुपम उदाहरण है । इस मौके पर कॉलेज के पूर्व छात्र डॉक्टर मृत्युंजय कुमार को प्रधानाचार्य ने सम्मानित किया । इस अवसर पर राजस्थान से राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय काटरवाड़ा के शिक्षक प्रियव्रत शर्मा के द्वारा ऑनलाइन संगोष्ठी में भाग लिया श्री शर्मा का विषय राम राज्य में शैक्षणिक एवं धार्मिक स्थिति था शिक्षक प्रियव्रत शर्मा के द्वारा ऑनलाइन संगोष्ठी में भाग लेते हुए बताया की राम राज्य की शैक्षणिक और धार्मिक व्यवस्था न केवल प्राचीन भारतीय समाज की उन्नत सोच का परिचायक थी अपितु आज के सामाजिक शैक्षणिक और नैतिक संकटों से उबरने के लिए भी एक प्रभावशाली मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है । इस अवसर पर कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉश ज्योतीन्द्र कुमार ने बताया कि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं बल्कि व्यक्ति के चरित्र नैतिकता और राम राज्य की परिकल्पना तभी संभव होगी जब सभी लोग प्रभु श्री राम के चरित्र का अनुकरण कर उनकी नीतियों का अनुपालन करेंगे । पहले दिन के मंगलवार को संगोष्ठी का उद्घाटन प्रधानाचार्य डॉक्टर रविंद्र नाथ तिवारी संयोजक डॉक्टर ममता पांडे और आयोजन सचिव मुकेश कुमार ने किया सभी सत्रों में लगभग 70 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए । मंच संचालन डॉक्टर विनय कुमार ने किया सत्र को प्रोफेसर संगीता वर्मा त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडू नेपाल, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा के वर्तमान कुलपति प्रो. प्रमेन्द्र कुमार बाजपेयी, प्रोश राज किशोर सिंह, डॉश संजय कुमार,अध्यक्ष, हिंदी विभाग वाईबीएन यूनिवर्सिटी, रांची, डॉ शुभ कुमार वर्णवाल, डॉ उज्जवल कुमार और डॉक्टर उदय सिंह आदि ने संबोधित किया द्य कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. रविंद्र नाथ तिवारी (प्रधानाचार्य) डॉ. ममता पांडे डॉश विनय कुमार, डॉ. मुकेश कुमार , डॉ. लाल बाबू साहनी, श्री प्रणव आनंदआदि की सक्रिय भूमिका रही ।

द्वि-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में सम्मानित हुए प्रो.शुभ वर्णवाल

जन प्रवाद। झंझारपुर । राम राज्य की संकल्पना और प्रासंगिकता विषय पर आयोजित द्वि-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो.शुभ कुमार वर्णवाल ने बतौर रिसोर्स पर्सन राम राज्य की संकल्पना पर विस्तार से प्रकाश डाला। सेमिनार का आयोजन त्रिमुहान, चंदौना स्थित महाकवि कालिदास सूर्यदेव महाविद्यालय, में आयोजित किया गया था। आयोजकों द्वारा प्रो.वर्णवाल को मिथिला की परंपरानुसार पाग-दोपटा, मोमेंटो, सम्मान पत्र से सम्मानित किया गया। प्रो. वर्णवाल के सम्मानित होने पर स्वचालित कविगोष्ठी के संयोजक भाषाविद प्रो.जेपी.सिंह, सह संयोजक उदय जायसवाल, ज्योति रमण झा, प्रो नवोनाथ झा, प्रो नरेन्द्र नारायण सिंह 'निराला', डॉ संजीव शमा, वेदानन्द साह, जगदीश प्रसाद मंडल, रामेश्वर निशांत, विनयानंद झा, भोलानंद झा, डॉ विनय विश्वबंधु, गौरीशंकर साह, डॉ राज कुमार भारती आदि ने हर्ष व्यक्त किया है।

58 वाँ कॉलेज स्थापना दिवस समारोह सह पूर्व छात्र सम्मेलन एवं व्याख्यान माला

एम.के.एस. कॉलेज, चंदौना

महाविद्यालय के सभागार में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया। पधारे हुए अतिथियों में माननीय लोकपाल डॉ. बैकुंठ पाण्डेय, डॉ. कामेश्वर पासवान, डॉ. आरएन तिवारी, प्रो. संजय कुमार, युगल किशोर ठाकुर, देव नारायण मिश्र, सुश्री सुचिता मिश्र आदि का स्वागत प्राचार्य डॉ. सिद्धार्थ शंकर ने किया। उन्होंने उपस्थित छात्र–छात्राओं से ईमानदारी से पढ़ाई करने का आग्रह किया । वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. ममता पांडे ने कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से हम अपने अतीत के पास होने की अनुभूति करते हैं। प्रो. डॉ. बैकुंठ पाण्डेय ने कहा कि पढ़ाई सबसे आसान काम है और इस मंत्र की बदौलत छात्र आगे बढ़ सकते हैं।

International Seminar

"The Role of Text for the Upliftment of Society"

(शास्त्रों से समाज निर्माण)

20.09.2025

दैनिक भास्कर

दरभंगा भास्कर 21-09-2025

शास्त्र से समाज का निर्माण विषय पर सम्मेलन हुआ

कार्यक्रम में भाग लेते प्राचार्य व विशिष्ट अतिथि।

भास्कर न्यूज | जाले

एमकेएस महाविद्यालय त्रिमुहान चंदौना में शनिवार को शास्त्र से समाज का निर्माण विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन ऑनलाइन एवं ऑफलाइन संबोधन से हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत प्राचार्य प्रोफेसर सिद्धार्थ शंकर सिंह के द्वारा दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना से की गई। कार्यक्रम में बीएससी की छात्राओं द्वारा वेलकम सॉन्ग प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विशिष्ट अतिथियों में डीआरटू मिथिला विश्वविद्यालय के डॉ मनीष कुमार और डॉ कामेश्वर पासवान की सहभागिता में हुई। सम्मेलन में ऑनलाइन माध्यम से वेव्स इंडिया के सेक्रेटरी प्रोफेसर शशि तिवारी एवं डॉ अपर्णा धीर ने अपने उद्बोधन से समस्त प्रतिभागियों को ज्ञानवर्धन किया। चाल्मर्स यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी स्वीडन के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आलोक रंजन ने नैनो टेक्नालॉजी पर चर्चा की।

प्रभात खबर

est News | प्लॉट में मिले शव | प्रेमी सं

दरभंगा/प्रदेश प्रभात

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के केंद्र में रही नयी तकनीकी

मंचस्थ कॉलेज के प्रधानाचार्य व अन्य शिक्षाविद.

जाले. महाकवि कालिदास दास सूर्यदेव महाविद्यालय त्रिमुहान चंदौना में शनिवार को शास्त्र से समाज निर्माण विषय पर ऑनलाइन व ऑफलाइन माध्यम से अंतर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ. सम्मेलन की शुरुआत प्रधानाचार्य प्रो. सिद्धार्थ शंकर सिंह के दीप प्रज्वलन व सरस्वती वंदना से हुई. इसके बाद स्वागत गीत की प्रस्तुति स्नातक विज्ञान की छात्राओं द्वारा की गयी. विशिष्ट अतिथियों में लनामिवि के जीडीआर-टू कुमार डॉ मनीष व लनामिवि के स्टेट ऑफिसर डॉ कामेश्वर पासवान की सहभागिता रही. इस दौरान ऑनलाइन माध्यम से वेव्स इंडिया के सेक्रेटरी प्रो. शशि तिवारी व डॉ अपर्णा धीर ने विचार रखे. वहीं स्वीडन के चाल्मर्स प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आलोक रंजन ने नैनो टेक्नोलॉजी, सेमीकंडक्टर-टू : द ब्रेन ऑफ मॉडर्न लाइफ, स्पेस मिशन, आप्टिकल फाइबर आदि पर चर्चा की. डॉ सत्येन्द्र कुमार सिन्हा, प्रो. एससी झा, प्रो. अब्दूस सलाम जिलानी ने भी विचार रखे. वैलिडिटी सेशन की समाप्ति पर धन्यवाद ज्ञापन प्राध्यापिका डॉ ममता पांडेय द्वारा किया गया. तकनीकी सत्र की शुरुआत में भारत सरकार के हिंदी सलाहकार समिति के पूर्व सदस्य डॉ श्वेत केतु शर्मा, इलाहाबाद विवि के सहायक प्रोफेसर डॉ भानू प्रकाश व रांची विवि की ममता सागर ऑनलाइन जुड़े अध्यक्षता प्रो. सिद्धार्थ शंकर सिंह ने की. डॉ एमके अंसारी व डॉ मुकेश कुमार भी शामिल रहे.

पूर्व मध्य रेल
ई-निविदा सूचना
ई-निविदा सूचना सं. पूसरे-मुप्रअ-नि- उ-ईटीएन-25-25-26.
भारत के राष्ट्रपति के तरफ से निम्न कार्य हेतु ई-निविदा

روزنامہ راشٹریہ سہارا

معاشرے کی ترقی کیلئے تبدیلیوں کا مطالعہ ضروری

جالے (محمد رفیع ساگر /ایس این بی) چندو نا میں واقع ایم کے ایس کالج میں ہفتہ کے روز" شاستر سے سماج کی تشکیل" کے موضوع پر ایک روزہ بین الاقوامی کانفرنس آن لائن اور آف لائن دونوں ذرائع سے منعقد ہوئی۔ کانفرنس میں سماجی انصاف اور مساوات پر تفصیلی بحث کی گئی۔ کانفرنس کا آغاز کالج کے پرنسپل پروفیسر سدھارتھ شنکر سنگھ نے چراغ روشن کر کے اور اجتماعی سرسوتی وندنا کے ساتھ کیا۔ طلبا و طالبات کی جانب سے خوش آمدیدی نغمہ پیش کیا گیا۔ معزز مہمانوں میں للت نارائن متھلا یونیورسٹی کے ڈاکٹر کمار منیش اور ڈاکٹر کامیشور پاسوان نے سماجی تبدیلیوں پر گفتگو کرتے ہوئے کہا کہ معاشرے میں ہونے والی تبدیلیوں اور ان کے اثرات کا مطالعہ کر کے ہی معاشرہ اپنی سمت اور ترقی کو درست انداز میں طے کرسکتا ہے۔ آن لائن سیشن میں ویوز انڈیا کی سکریٹری پروفیسر ششی تیواری اور ڈاکٹر اپرنا دھیر نے جدید دور کے سماج پر بے روزگاری کے اثرات پر روشنی ڈالی۔ ویلیڈیٹی سیشن میں کالمرز یونیورسٹی آف ٹیکنالوجی، سویڈن کے سینئر سائنسدان ڈاکٹر الوک رنجن، ملت کالج، دربھنگہ کے بوٹنی ڈیپارٹمنٹ کے سربراہ ڈاکٹر ایم کے انصاری وغیرہ نے نینو ٹیکنالوجی، سیمی کنڈکٹر، جدید زندگی کا دماغ، اسپیس مشن، آپٹیکل فائبر، روشنی کی ذرات کی فطرت اور لیتھیم میٹل بیٹری جیسے موضوعات پر خصوصی گفتگو کی۔ تعلیمی ماہرین ڈاکٹر ستیندر کمار سنہا، پروفیسر ایس سی جھا اور پروفیسر عبدالسلام جیلانی نے بھی متعلقہ خیالات پیش کیے۔ تکنیکی سیشن میں بھارت حکومت کی ہندی مشاورتی کمیٹی کے سابق رکن ڈاکٹر شویتکیتو شرما، الہ آباد یونیورسٹی کے اسسٹنٹ پروفیسر ڈاکٹر بھانو پرکاش ترپاٹھی اور رانچی یونیورسٹی کی ڈاکٹر ممتا ساگر نے سماج کی تشکیل پر اپنے خیالات آن لائن پیش کیے۔ کانفرنس کی صدارت پروفیسر سدھارتھ شنکر سنگھ نے کی، جبکہ ڈاکٹر جتیندر کمار نے پروگرام کا انتظام سنبھالا اور شکریہ کا اظہار ڈاکٹر ممتا پانڈے اور ڈاکٹر مکیش کمار نے کیا۔ کانفرنس کا اختتام قومی ترانے کے ساتھ ہوا۔

>Patna Edition/2025-09-21/ P-5/ Roznama Rashtriya Sahara/ ro

Exclusive Summary on the International Web Lecture

MKS College, Darbhanga, successfully organized an international web lecture series under the aegis of the *Karyanand Sharma Lecture Series* from 6 to 15 October 2025. The series was designed to enrich the academic environment of the college by bringing together scholars, researchers, and practitioners from across the globe to discuss contemporary issues in social sciences, commerce, and science disciplines. The program attracted students, faculty, and researchers from multiple institutions, fostering interdisciplinary learning and global academic exchange.

Structure and Themes

The web lecture series spanned ten days, with each day dedicated to a different theme or discipline. The lectures were delivered virtually by experts from renowned universities and research institutions in India and abroad. The themes included:

- **Social Sciences**: Social movements, gender studies, political economy, and public policy.
- **Commerce**: Entrepreneurship, financial management, and global trade.
- **Science**: Environmental science, biotechnology, and data science.

Each session was followed by a Q&A segment, allowing participants to engage directly with the speakers and clarify their doubts.

Notable Sessions and Highlights

The International Web Lecture Series at MKS College, Darbhanga, was formally inaugurated by the Hon'ble Vice-Chancellor, Prof. Sanjay Kumar Chaudhary (Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga), in the presence of the Principal, Dr. Sidharth Shankar Singh, teaching staff, and a large number of students from Social Science, Commerce, and Science faculties. The inauguration marked the beginning of a ten-day online lecture series under the aegis of the *Karyanand Sharma Lecture Series*, running from 6 to 15 October 2025.

Inaugural address by the Vice-Chancellor

In his inaugural address, Prof. Sanjay Kumar Chaudhary appreciated MKS College for taking the initiative to organize an international-level web lecture series, stressing that such events are essential for bridging the gap between classroom teaching and contemporary global knowledge. He highlighted the importance of exposure to international perspectives in social sciences, commerce, and science, and urged students to maximize their learning from the diverse range of speakers and themes.

Further, the Principal acknowledged the role of students for their enthusiastic response and regular attendance, which reflected their commitment to learning. He specially praised the technical support team for seamless online arrangements, smooth streaming of lectures, and troubleshooting throughout the ten-day event, reiterating that such academic-technical collaboration is crucial for the growth of modern higher education.

The International Web Lecture Series at MKS College began with the joint session organized by the Department of Sociology and the Department of Psychology, which focused on the theme *"The Degradation of Social Institutions: A Socio-Psychological Analysis"*. The opening lecture set a strong academic tone for the series by highlighting how core social institutions—such as family, marriage, education, and kinship—are undergoing visible strain in contemporary society due to changing values, economic pressures, and digital individualism.

Participation and Impact

The web lecture series saw enthusiastic participation from students of social sciences, commerce, and science faculties at MKS College, as well as from affiliated institutions. The virtual format enabled a wider audience to attend the programme, including those from remote areas. Participants appreciated the diverse range of topics and the opportunity to interact with experts from different fields.

The series also enhanced the college's reputation as a hub for academic excellence and innovation. It encouraged faculty members to integrate global perspectives into their teaching learning method and inspired students to pursue research and higher studies.

Conclusion

The international web lecture series under the Karyanand Sharma Lecture Series was a significant academic event for MKS College. It not only provided a platform for intellectual exchange but also strengthened the institution's commitment to interdisciplinary learning and social responsibility. The success of the series

underscores the importance of such initiatives in preparing students for the challenges of a rapidly changing world.

This report highlights the key aspects of the event, its objectives, and its impact on the academic community. It serves as a valuable record of MKS College's efforts to promote global learning and academic excellence.

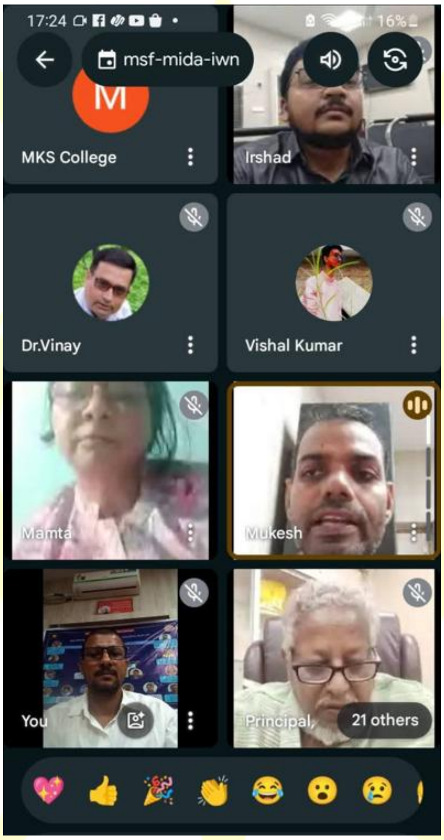

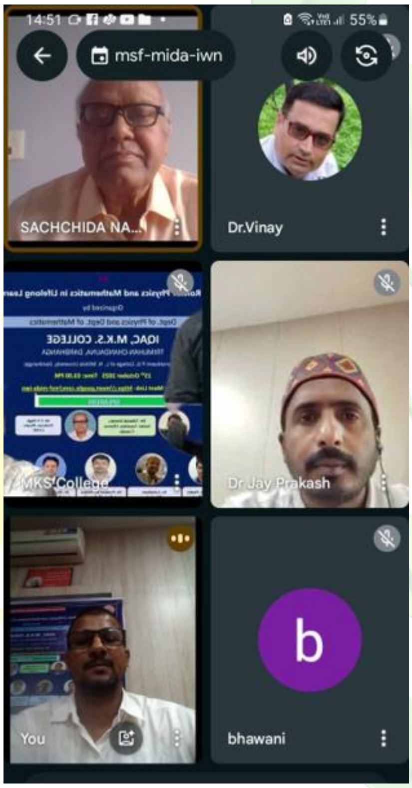

Workshop on User Awareness on INFLIBNET and IRINS Services

दिनांक 10 मार्च, 2026 को प्रातः 09:00 बजे से जुबिली हॉल, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में आई.एन.एफ.एल.आई.बी.नेट. (INFLIBNET) एवं आई.आर.आई.एन.एस. (IRINS) सेवाओं पर उपयोगकर्ता जागरूकता कार्यशाला का सफल आयोजन ऑफलाइन माध्यम से किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन आई.क्यू.ए.सी. (IQAC), मिल्लत कॉलेज, दरभंगा एवं एम.के.एस. कॉलेज, चंदौना द्वारा आई.एन.एफ.एल.आई.बी.नेट. केन्द्र, गांधीनगर (गुजरात) के सहयोग से किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को INFLIBNET की राष्ट्रीय सेवाओं तथा IRINS(Indian Research Information Network System) के प्रभावी उपयोग से परिचित कराना था।

कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक माननीय कुलपति प्रो. संजय कुमार चौधरी (एल.एन. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा) थे। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. (डॉ.) बिंदे कुमार, कुलपति, बी.यू.एच.एस., पटना एवं निदेशक, आई.जी.आई.एम.एस., पटना उपस्थित रहे। कार्यक्रम की संरक्षक डॉ. दिव्या रानी हांसदा, कुलसचिव, एल.एन. मिथिला विश्वविद्यालय थीं। आयोजन के अध्यक्ष एवं संयोजक डॉ. सिद्धार्थ शंकर सिंह, प्राचार्य, मिल्लत कॉलेज एवं एम.के.एस. कॉलेज, दरभंगा थे।

कार्यशाला के संसाधन व्यक्तियों में डॉ. अभिषेक कुमार, साइंटिस्ट तथा श्री राजन कुमार, साइंटिस्ट आई.एन.एफ.एल.आई.बी.नेट. केन्द्र, गांधीनगर (गुजरात) शामिल थे। उन्होंने प्रतिभागियों को INFLIBNET की विभिन्न सेवाओं, IRINS प्लेटफॉर्म, शोध प्रोफाइल निर्माण, ORCID [Google Scholar] Scopus ID के एकीकरण तथा शोध प्रकाशनों के प्रभावी प्रबंधन एवं दृश्यता बढ़ाने की विस्तृत जानकारी प्रदान की। साथ ही IRINS के व्यावहारिक उपयोग का प्रदर्शन भी किया गया।

कार्यशाला के प्रमुख उद्देश्यों में शोध संसाधनों के व्यावहारिक उपयोग का प्रशिक्षण प्रदान करना तथा शोध की गुणवत्ता, दृश्यता और अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देना शामिल था। प्रतिभागियों ने विशेषज्ञों से संवाद कर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया और कार्यशाला को अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी बताया।

अंत में आयोजकों द्वारा सभी अतिथियों, संसाधन व्यक्तियों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। यह कार्यशाला शोध एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल संसाधनों के प्रभावी उपयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुई।

TWO YEARS OF GLORIOUS & GOLDEN PERIOD AS HON'BLE VICE-CHANCELLOR
MILLAT COLLEGE, DARBHANGA
&
M.K.S. COLLEGE

benefits and Uses
MILLAT COLLEGE, DARBHANGA
&
M.K.S. COLLEGE
Workshop

TWO YEARS OF GLORIOUS & GOLDEN PERIOD AS HON'BLE VICE-CHANCELLOR
MILLAT COLLEGE, DARBHANGA
&
M.K.S. COLLEGE
TRIMUHAN-CHANDAUNA, DARBHANGA (BIHAR)

पल्लव प्रकाश

यज्ञ का वैज्ञानिक एवं पर्यावरणीय महत्त्व

यज्ञ भारतीय ज्ञान परंपरा की एक अमूल्य धरोहर है। यह हमें प्रकृति के साथ संतुलित जीवन, पर्यावरण संरक्षण, आत्मशुद्धि तथा लोककल्याण का संदेश देता है। यदि इसकी मूल भावनाकृ"सर्वे भवन्तु सुखिनः" को जीवन में अपनाया जाए, तो स्वच्छ पर्यावरण, स्वस्थ समाज और सतत विकास के लक्ष्य की दिशा में सार्थक कदम बढ़ाए जा सकते हैं।

भारतीय संस्कृति में यज्ञ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रकृति, मानव और समाज के बीच संतुलन स्थापित करने का एक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक माध्यम है। प्राचीन ऋषि–मुनियों ने यज्ञ को लोककल्याण, पर्यावरण संरक्षण तथा मानसिक एवं शारीरिक शुद्धि का प्रभावी साधन माना है। आज जब विश्व प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकटों से जूझ रहा है, तब यज्ञ के वैज्ञानिक एवं पर्यावरणीय पक्ष पर पुनः विचार करना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

यज्ञ में प्रयुक्त समिधा, घृत, औषधीय वनस्पतियाँ, हवन सामग्री तथा सुगंधित द्रव्य अग्नि के माध्यम से सूक्ष्म कणों में परिवर्तित होकर वातावरण में फैलते हैं। अनेक वैज्ञानिक अध्ययनों में यह पाया गया है कि इनसे उत्पन्न कुछ तत्व वातावरण में उपस्थित हानिकारक जीवाणुओं एवं दुर्गंध को कम करने में सहायक हो सकते हैं। औषधीय धूम्र का सीमित एवं नियंत्रित उपयोग वायु की गुणवत्ता पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। यद्यपि इस विषय पर और व्यापक वैज्ञानिक अनुसंधान की आवश्यकता है, फिर भी पारंपरिक अनुभव और प्रारम्भिक अध्ययन इसके संभावित लाभों की ओर संकेत करते हैं।

यज्ञ का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष पर्यावरण संरक्षण की भावना है। वैदिक साहित्य में प्रकृति के प्रत्येक तत्व जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश को पूजनीय माना गया है। यज्ञ हमें यह संदेश देता है कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, वृक्षारोपण, जल–संरक्षण तथा जैव विविधता की रक्षा मानव का नैतिक दायित्व है। इस प्रकार यज्ञ केवल अग्निहोत्र तक सीमित न होकर प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व का प्रतीक बन जाता है।

वैज्ञानिक दृष्टि से यज्ञ अनुशासन, सकारात्मक सोच तथा सामूहिक सहभागिता का भी माध्यम है। यज्ञ के दौरान मंत्रोच्चारण, ध्यान एवं सामूहिक प्रार्थना से मानसिक एकाग्रता, आत्मविश्वास और सामाजिक समरसता को बल मिलता है। जब लोग एक साथ बैठकर लोकमंगल की भावना से यज्ञ करते हैं, तब सहयोग, सद्भाव और सेवा की भावना विकसित होती है, जो स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक होती है।

प्राचार्य महोदय प्रो. सिद्धार्थ शंकर सिंह के मार्गदर्शन में शांतिकुंज, हरिद्वार की टोली ने महाविद्यालय परिसर में ''यज्ञ का पर्यावरणीय महत्त्व'' विषय पर प्रभावशाली व्याख्यान एवं यज्ञ कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर टोली के सदस्यों ने यज्ञ के वैज्ञानिक, आध्यात्मिक तथा पर्यावरणीय पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

वक्ताओं ने बताया कि यज्ञ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, वायु शुद्धिकरण, सकारात्मक ऊर्जा के संचार तथा सामाजिक समरसता का प्रभावी माध्यम है। उन्होंने कहा कि यज्ञ

में प्रयुक्त औषधीय सामग्री से वातावरण शुद्ध होता है तथा मानव जीवन में स्वास्थ्य, शांति और सद्भाव का विकास होता है।

कार्यक्रम के अंत में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सामूहिक यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें महाविद्यालय के शिक्षकगण, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राओं ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। प्राचार्य महोदय ने ऐसे जनजागरण कार्यक्रमों को समय की आवश्यकता बताते हुए शांतिकुंज की टोली का आभार व्यक्त किया तथा विद्यार्थियों से पर्यावरण संरक्षण एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने का आह्वान किया।

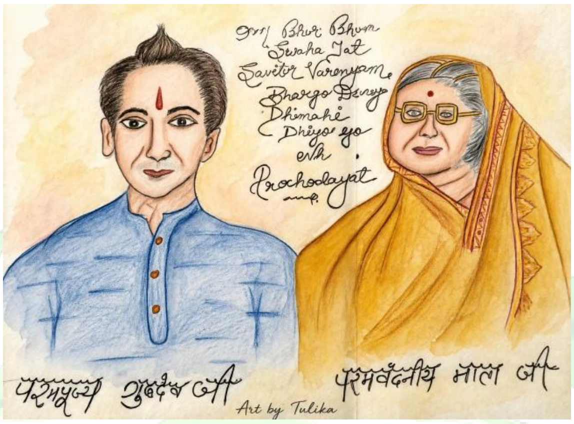

पल्लव प्रकाश

शैक्षणिक– भ्रमण

महाकवि कालिदास सूर्यदेव महाविद्यालय, चन्दौना के छात्र - छात्राओं के व्यावहारिक ज्ञान - वृद्धि, तथा उनके सर्वांगीण विकास एवं मनोरंजन हेतु महाविद्यालय की तरफ से एक शैक्षणिक–भ्रमण का आयोजन किया गया जिसमें 45 छात्र - छात्राओं के एक समूह को तीन दिवसीय शैक्षणिक–भ्रमण हेतु बिहार के नालंदा जिला भेजा गया । 28, फरवरी 2025 की सुबह शंखनाद के बीच महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रविंद्र नाथ तिवारी ने वरिष्ठ शिक्षकों की उपस्थिति में हरी झंडी दिखाकर बस को रवाना किया । संयोजक डॉ. ममता पाण्डेय तथा कुछ शिक्षकों एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के नेतृत्व में छात्र - छात्राओं ने नालंदा जिले के पावापुरी में स्थित जलमंदिर का भ्रमण किया । अगले दिन भ्रमण दल ने नालंदा जिले के राजगीर में स्थित नेचर सफारी के मनमोहक दृश्यों को देखने के लिए 500 हेक्टेयर में फैले नेचर सफारी का रुख किया जहाँ सभी ने मानव निर्मित ग्लास ब्रिज एवं सस्पेंशन ब्रिज पर चलने के रोमांच का अनुभव किया । तत्पश्चात भ्रमण दल राजगीर वन्यजीव सफारी को देखने के लिए आगे बढ़ गया जहाँ दल ने रॉयल बंगाल टाइगर, एशियाई शेर, भारतीय तेंदुआ, स्लॉथ बियर, चीतल, सांभर, काला हिरन एवं बार्किंग डियर जैसे जंगली पशुओं को सफलता पूर्वक देखने क आनंद लिया । इसके बाद भ्रमण दल ने राजगीर की रत्नागिरी पहाडियों की चोटी पर बने विश्व शांति स्तूप का अवलोकन रोपवे के माद्यम से किया जो अत्यंत आकर्षक है । भ्रमण के अंतिम दिवस में दल ने सर्वप्रथम माउंटेन मैन के रूप में विख्यात दशरथ मांझी द्वारा पहाड़ को काटकर बनाई गयी सड़क जो गहलौर गाँव में स्थित है को देखा जो की इंसानी जज्बे और जुनून की उत्कृष्ट मिसाल है । और अंत में भ्रमण दल ने नालंदा महाविहार के पुरातत्व स्थल का अवलोकन किया जो प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात केंद्र था और वर्तमान में यूनेस्को विश्व धरोहर में शामिल है । नालंदा महाविहार पुरातत्व स्थल भारत एवं बिहार के गौरवशाली इतिहास को दर्शाता है ।

शिक्षकों में श्री लाल बाबु सहनी, श्री मुकेश कुमार, डॉ. ओम प्रकाश प्रभाकर, डॉ. ज्योतीन्द्र कुमार, डॉ. बबिता कुमारी (हिंदी विभाग), डॉ. मनीष यादव, डॉ. रश्मि प्रिया, डॉ. गोपाल कुमार चौधरी, डॉ. संजय कुमार हाजरा एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों में लेखापाल श्री राकेश कुमार, श्री रविरंजन, श्री गौरव कुमार सिंह, श्री मनीष कुमार झा, श्री विकास कुमार भ्रमण दल में शामिल रहे तथा छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन किया । इस शैक्षणिक भ्रमण को सफल बनाने में महाविद्यालय के प्रधान लिपिक श्री प्रणव आनंद जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

A/C SLEEPER
JAI MATA DI
महाकवि कालिदास सूर्यदेव महाविद्यालय
शैक्षणिक भ्रमण–2025
SPEED
BR 31
PA5751
महाकवि कालिदास सूर्यदेव महाविद्यालय

राजगीर वन्यप्राणी सफारी

"हरित भविष्य की ओर एक सार्थक कदम

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर वृक्षारोपण कार्यक्रम।"

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 2026 की पूर्व संध्या पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन :

महाकवि कालिदास सूर्यदेव महाविद्यालय, त्रिमुहान, चंदौना

दिनांक : 20 जून 2026

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 2026 की पूर्व संध्या पर महाकवि कालिदास सूर्यदेव महाविद्यालय, त्रिमुहान, चंदौना में पर्यावरण संरक्षण एवं हरित परिसर के संकल्प को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से एक विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम अपराह्न 01:00 बजे महाविद्यालय प्रांगण में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षकगण, शिक्षकेत्तर कर्मियों एवं छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। इस अवसर पर माननीय कुलपति महोदय प्रोफेसर संजय कुमार चौधरी, महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० सिद्धार्थ शंकर सिंह ने गायत्री महामंत्र के उच्चारण के साथ पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण, प्रकृति संवर्धन तथा सतत विकास के प्रति जागरूकता का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि वृक्षारोपण केवल पर्यावरणीय दायित्व ही नहीं, बल्कि भावी पीढ़ियों के प्रति हमारी नैतिक जिम्मेदारी भी है। यह प्रथम चरण है, हम इसे वन महोत्सव एवं ग्रीन एडिटिंग के रूप में विस्तारित करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

इस पुनीत अवसर पर डॉ० आफताब आलम, डॉ० ज्योतीन्द्र कुमार, डॉ० जय प्रकाश झा, डॉ० ओम प्रकाश प्रभाकर, श्री राकेश कुमार, श्री रविरंजन, श्री हरिकिशोर एवं श्री किशन सहित महाविद्यालय के समस्त शिक्षकेत्तर कर्मियों ने सक्रिय सहभागिता निभाई तथा हरित एवं स्वच्छ वातावरण के निर्माण हेतु अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कार्यक्रम का समापन पर्यावरण संरक्षण, वृक्ष संवर्धन एवं स्वच्छ पर्यावरण के निर्माण के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

माननीय कुलपति महोदय
प्रो0(डॉ0) संजय कुमार चौधरी
जी के शुभ कर-कमलों द्वारा
वृक्षारोपण का शुभारंभ

पल्लव
प्रकाश

INDEPENDENCE DAY

2025

पल्लव
प्रकाश

पल्लव
प्रकाश

Internship Orientation Programme, 2026 - Semester V
(Session 2023-27)

Induction Programme, 2026 - Semester I
(Session 2026-30)

महाकवि कालिदास सूर्यदेव महाविद्यालय
त्रिमुहान - चन्दौना, दरभंगा
(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की एक अंगीभूत इकाई)
स्वागतम्
स्वागतम्